आदमी रो सींग

[राजस्थानी रो मौलिक कथा-संग्रह]

करणीदान बारहठ

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर (राजस्थान)

प्रकाशक—
मानद मंत्री,
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर (राजस्थान)

पैलो संस्करण—११०० प्रतियां
सन् १९७४

मोल :—६.००

मुद्रक—
शिक्षा भारती प्रेस
फड़ बाजार
बीकानेर

प्रकाशकीय

राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी), बीकानेर राजस्थानी साहित्य रै प्रचार-प्रसार सारू जिकी किताबां छपावण सारू स्वीकारी, वां मांय सूं श्री करणीदान बारहठ रो कहाणी-संग्रह—'आदमी रो सींग' भी अेक है।

इण कथा-संग्रह सूं पैली बारहठजी री हिन्दी अर राजस्थानी में मोकळी पोथ्यां छप चूकी है जिणां रो साहित्य-संसार में आदर हुयो है। प्रस्तुत कथा-संग्रह में लिखार री मौलिक कहाण्यां है, अर मौलिक साहित्य री आज च्यारूंमेर मांग है तथा जनता उणनै रुचि सूं बांचै।

भरोसो है, बारहठजी रो ओ कथा-संग्रह साहित्य संसार में आदरीजसी अर जनता इण नै कोड सूं अपणासी।

श्रीलाल नथमलजी जोशी
मानद मंत्री
राजस्थानी भाषा साहित्य संगम (अकादमी)
बीकानेर

म्हारी दो बात

कहाणी-संग्रह 'आदमी रो सींग' पाठकां रै सामै मेलूं हूं। राजस्थानी रो गद्य ग्रोजूं तांई पाठकां रै सामै आयो कम। कदेई एहड़ा दिन हा जद पाठक अंगरेजी नै छोड हिन्दी नै पढणो नहीं चावै हा। हिन्दी वांनै भैंडी लागै ही। पण ज्यूं-ज्यूं हिन्दी रस देवण लागी, पाठकां हिन्दी नै छाती सूं लगाई। राजस्थानी री भी वा ही हालत है। पण ज्यूं-ज्यूं आ रस देवण लागसी, त्यूं-त्यूं आ पाठकां नै नेड़ै ले लेसी।

कहाणी राजस्थानी वास्तै नई कोनी। पण आज जिनगी रा मूल्य बदळण लागरया है, इण वास्तै राजस्थानी री कहाणी में भी नयो मोड़ देवणो पड़सी। आज थोटी बात पाठकां नै कोनी सुहावै, जे कोई धींगाणै ही नाण देवणो चावै तो बात दूजी है। राजस्थानी नै पाठकां नै नेड़ै लेवण खातर आपरै कैवणै रो तोर तरीको बदळणो पड़सी। इंसूं वेसी ईं बात री जरूरत है कै लेखक आजरी जिनगी नै नेड़ै सूं देखै, लीक पीटणै सूं भासा रो भलो नी हो सकै। ई रै सागै अेक बात और कैवण जोग है कै लेखक लकीर रा फकीर हुवै तो भी वा बात सुहावणी कोनी लागै। दूजी भासावां में इसी हवा चालै तो आपां भी बिसी चलावां। राजस्थानी जद तांई जन-जीवण नै नी प्रकटै, भाषा अपणो अलग सूं अस्तित्व नी बणा सकैली। राजस्थान री धरती पर निरा उपन्यास, कहाण्यां, काव्य मांडणा पड़्या है। फेर लेखक जूठ खावण नै क्यूं जावै ? जे जावै ही तो राजस्थान रो जन-जीवण कीरै लागैलो ?

म्हारा पाठक जिसी म्हारी कविता नै अपणाई बींसूं बेसी म्हारी कहाण्यां नै अपणासी, इसो भरोसो है।

करणीदान बारहठ

२४ सितम्बर, १९७२.

गुरुवर 'मुकुल' जी नै
घणै मान स्यूं



सूची

सूवटी री बेटी

सूवटी री बेटी सोनड़ी जद छोटी ही, खुरसेड़ी-सी ही, जाणै पून सागै उड़ैगी, पण जद मोट्यार जुवान हुई तो इसी फूटरी हुई जाणै पूरो किर्योड़ो काकड़ियो हुवै। सूवटी रै गरीबी तो जामणै सूं बंधी ही, फेर धणी मिनख रै मरतां ही तीन टावरां रो बोझ माथै पर आ पड़्यो। मोटोड़ै नै तो सीरी राख दियो जद गाडो गुड़कण लाग्यो, पण बेटी री जुवानी देख'र जी हालग्यो। सोनड़ी चाल तो मटकै सूं, बातां करै तो आंख्यां सूं, रग-रग नाचण लागगी। सूवटी घणी वरजै, 'माळजादी, सावळ कोनी चाली जै, रोवण जोगी, पराये घर जाणो है, सूल कोनी बोलीजै।' पण सोनड़ी रै कोई सारै हो। सोनड़ी कोठै में बड़नै काच में देख नै आंख्यां में काजळ घालती और गीत गुणगुणाती। अेक दिन सूवटी देख्यो कै ठाकर गुट्टसिंह रो कंवर घर रै आगै खड़्यो हो। सूवटी टोक्यो—'कियां खड़्या हो आप, काम है कांई ?'

सूवटी नैं घणी रीस ऊपड़ी, पण करै कांई ? मोटोड़ो छोरो कानियो ठाकर गुर्दुसिंह रो सोरो तो हो ही। वीरैं पाछै सूवटी घणी स्यांत राखण लागगी। पण सोनड़ी पाणी नैं जांवती तो बण ठणनैं जांवती। सोनड़ो कनैं चणन-ठणन नैं हो तो कांई, पण वीरों रूप ही बाळणजोगो हो, किसा ही कपड़ा मायं सोंवतो। मोटी आंख्यां में काजळ घालेड़ो, लाल टमाटर-सा गाल, मुड़चेड़ी भुंवा, सूवैं री चूंच-सो नाक। सूवटी वीनैं जोवती तो काळजो एक हाथ ऊंडो बैठ ज्यांवतो, जीवड़ो धड़क-धड़क करतो। सोनड़ी री रांद कियां कटै, माथैं रो बोझ सोतां जागतां कठैई उतरैई तो कोनी। फेर सूवटी लुगाईरी जात, करैं तो कांई। ईनैं-वीनैं फिरणैं रो विचार करै तो सोनड़ी रो फूल हिरणियां चुग ज्यावै, लेरैं रुखाळो कुण ? फेर ब्याव मैं कांई नीं चाईजै।

सूवटी सोनड़ी रैं ब्याव खातर तरळो करण लागगी, भाई-बीरां नैं जगां-जगां कागज लिखवाया, पण कठैकं मनचींत्या समचार आया ही तो कोनी। सूवटी रैं मन मैं अेक छोरैं री स्यांत तो ही, पण सूवटी रैं मन लाग्यो कोनी हो। रूप-सूप रो तो इसो हो ई, पण ऊमर रो खासो मोटो हो। वो तो सो खरचो झालण जोग हो पण सूवटी रैं मन भायो ही तो कोनी। ईं टाबर री सीष ठाकर गुर्दुसिंह करी ही।

कंवर कीं काम रो भानो लेयनैं घर मैं आ ही ज्यांवतो, फेर माचीं पर बैठ ज्यांवतो, वातां करतो रैंवतो, सूवटी सूं, कानियैं सूं, घर री, खेतरी, बारैं री, मीतर री। सूवटी घणी मन मरोड़ती, मांय ही मांय बळती, पण बोलो अेक तरैं अन्नदाता रो बेटो हो, खिज ज्याव तो कानियैं नैं सीर सूं कान पकड़नैं काढ

देवै, फेर ईं घर रो कुण धणी। काया नैं रोज दो बार भाड़ो चाईजै, तन ढकणनैं मोटो-माड़ो कपड़ो भी। सूवटी स्याणप बरतै बैठणै सूं कांई हुवै, पण सांपखादी सोनड़ी रो नखरो ही न्यारो। बोलै तो आंख्यां मटकै, चालै तो अंग अंग थिरकै, डील में सौ बंक पड़ै। कँवर बात तो सूवटी सूं करै, पण नैण सोनड़ी रै आसै पासै हालता रैवे। सूवटी सूं छानी कांई। बीरै भी तो अै दिन आयेड़ा हा।

अेक दिन सूवटी पड़ोस में घणी देर वातां लागगी अर घर रो ध्यान भूल ही गी। चाण-चकै याद आई अर घर कानी चाल पड़ी। घरै आई तो सूवटी रो मन फक होयग्यो। कँवर मुंह नीचो करनै कोठै सूं बारै निकळ्यो, सोनड़ी नै काटै तो खून नीं। सूवटी रीस में आयनै सोनड़ी री कड़तू में दो गुलचा मार्‌या, बाळां रै मरोड़ लगाई—'रांड कुलछणी, कर लियो नीं तो मूंडो काळो।'

सूवटी आंची नै स्यांत सूं देखी, फेर रीस दूणी उमड़ी। मगरां में ताणनै दो मुक्का लगाया— 'तेरै बाप सूं चूकी कोनी, हूं पैलै समझै ही तेरो राम निसरैलो। बोल, कुमाणस, पाप में पड़ीक नीं।'

सोनड़ी ओजूं की नीं बोली। सूवटी बीरो हाथ पकड़'र नीचै दे मारी। सोनड़ी रै खीडेड़ा गाभां सूं सूवटी और लाल होगी। पड़ी रै दो लात जमादी, फेर रोवण लागगी। आज कई दिनां सूं सूवटी आपरै खसम नैं याद करनै रोई—'मरग्यो, पण म्हानै और मारग्यो, आ कुभागण कठै सूं जामगी।'

सोनड़ी नाकै पड़ी-पड़ी सिसकै ही।

सूवटी नैं भाजनै गुदड़सिह कनै जाणो पड़्यो। सोनड़ी कठैई काळो मूंडो न करा देवै, बींऊं पैली ईं रो बाळो फूंको कर देऊं।

गुट्टूसिह री वतायेड़ी सीध सूवटी रै जचगी।

फेर सोनड़ी रै फेरां री रात ग्रागी। सूवटी रो पीसो लाग्यो नी अेक। ग्राछो राग-रंगत सूं ब्याव होग्यो। सोनड़ी घूंघटो काढ लियो, चीनणो वणगी, मां री छाती में मूंडो लगानै रोई फेर मूंडो ढकनै सासरै गई।

सोनड़ी सासरै सूं पूठी ग्राई जद वींरी रंगत ही न्यारी होगी ही। कानां में झूमका ग्रर पगां में घूघरिया वाजै। मां बेटी नै काळजै लगाई, जद वींरो जी टिकग्यो। सोनड़ी घाघरियो घमकाती ग्रांगणै में फिरै तो मां रो जीसोरो हुवै। गुट्टूसिह रो कंवर बधाई देणै खातर घरे ग्राग्यो, मां रो काळजो एकर तो धड़क्यो, फेर टिकग्यो। हमैं कांई है, काळस लागणै का तो दिन टिपग्या।

सूवटी पड़ोस में जायनै घंटा वातां करती रैवती, वींनै फिकर कांई हो। फिकर हो जको तो गयो मिट। धन जकै री चोरी हो सकै ही, वो तो ग्रबार परायो होग्यो। फेर चोरी तो हमैं होणै ऊं रही, कोई चाख लेसी तो ईं रो विगड़ै ही कांई। फेर रुखाळी ग्राप ग्रापरी है, कठै तक परायो मिनख रुखाळी राखै। सोनड़ी कोई वावळी तो कोनी। वा भी तो ग्रावरू सारु समझण ग्राळी होगी। लुगाई नै जे पराई गंध ग्राछी लागै तो वा कोई लुगाई थोड़ी हुवै।

पण कंवर हिल्योड़ो घरे जरूर ग्राव, कीं सागै ल्यावै। ग्रायनै वोलै 'ग्राज ब्याव ग्राळै घर सूं मिठाई ग्रागी ही, सोच्यो कानिये खातर ले ज्याऊं, ले ग्रायो।'

'मैलद्यो भाई, ग्राप म्हारी नीं राखो तो राखै कुण ?' सूवटी कैवै।

'ग्राज शहर कानीं गयो हो, ग्रांवतो थो ग्रमरूद ले ग्रायो, सोच्यो कानिये खातर ले ज्याऊं।'

सूवटी ग्रमरूद माँय मेल देव ।

फेर कंवर बैठचो रेवै, इली-बिली करतो रेवै, आंख्यां तो सोनड़ी कानी ।

सोनड़ी टुकर-टुकर कंवर कानी देखती रेवै ।

सूवटी जाणगी, बात वठै ई है । लुगाई री जात लुगाई नैं नी समझै ग्रा बात किसो ?

अेक दिन ग्रोलै में सूवटी सोनड़ी नैं समझाई, लुगाई री ग्राबरु सारूं बात बताई, फेर सिसकारो मारचो—सोनड़ी रो बीन तो ग्राड़ लट्ठ है, रेवड़ रो गुवाळियो सो जरड़ो, फेर सिर में ग्रर दाढी में धोळा चिमकै । पण बा भी तो जद ब्याही जी ही जद धोळै धप्प सागै ब्याही जी ही, वण तो पराये मरद कानी देख्यो ही तो कोनी । कित्ता बीरै लेरै मुस्क लेंवता फिरता ।

अेक दिन सोनड़ी सुगन्धी रो तेल माथै में लगायो, ग्रर मुस्क फूटी । सूवटी सोनड़ी नैं पूछ्यो—मरज्याणी, ग्रो तेल कठै सूं ल्याई ?"

—सासरै सूं

कूड़ी क्यूं बोलै ?

—साची, मां

—साची बता, तनै मेरी सूं है ।

मां री सूं सोनड़ी खाई कोनी ग्रर साची बोल दी—'कंवर साहब ल्यायनै दीन्यो, ग्रो तेल, ग्रा साबण, ग्रो ग्रन्तर ।'

सूवटी नैं तेल ग्रर साबण में वांस ग्रावण लाग गी । वण सोवक्यूं फेकनै मारचो—'माळजादी, कांई लखण झाल्या है तैं । मिनख बरगो मिनख है तेरै, तनै ई घर में ठोड़ नीं ।'

पण सासरै सूं कोई लेवण ग्रावै तो सोनड़ी सासरै जावै ।

आखर वण मन में करयो—'कूओ में पड़णनदयो, सोनड़ी नैं पराय मिनख री चाट लागगी।' वां दिनां पछै बण दो तीन बार कँवर नैं सोनड़ी रै सागै घर में एकलो देख लियो।

फेर अेक दिन सोनड़ी खांसी-उवाक करण लागगी। सूवटी समझगी कै सोनड़ी पेट में पाप भर लीन्यो। फेर वो पाप वधण लागग्यो। ईं पाप रो काळस तो सूवटी रै कोनी लागै। सोनड़ी ही ईं पाप री धणियाणी है। पेट फूलतो-फूलतो ढ़ोल सो वणग्यो।

सोनड़ी रै सासरै सूं समाचार आयो कै बीनणी ने भेज दिराओ। सूवटी शुभ समाचार मेज दीन्यो अर कुहायो कै पैलो जापो पीर में होणे रो रिवाज है। सूवटी कनै ओजूं समचार कोनी आयो।

आधी रात पाछै सोनड़ी रै पेट में पीड़ उठी। दाई आयां पाछै पांख्यां मांय सूं फूल निकळ्यो। सूवटी मन मारनै कांसी री थाळी वजाई—झननन....झननन।

बारा दिनां पाछै नाम निकल्यो। घर में सुवटिया गाईज्या, सोनड़ी रेशम रो पीळो ओढ्यो। कँवर साहब आयनै वधाई दीनी।

सूवटी ख्यांत करनै देखती रैवती—छोरै री आंखड़-नाख; कँवर सूं मिलती जारी हो। सोनड़ी कोड सूं टाबर नैं खिलावती रोवतै कदेही छोड़ती नीं। सूवटी कदै-कदै ही नानड़िये नै लेवती। पतोनी बीनै वो क्यूं कोनी सुवांवतो।

सासरा आळा ओजूं कुहायो—'बीनणी ने हमैं तो घालदयो।'

पण टाबर अजूं नानो हो हो। पूठो समाचार कर दीन्यो—'थोड़ा और ठहरो।'

पण चाणचकै ही नानड़िये ने इसो हवा लागी कै वीरो काळजो उठण-बैठण लागग्यो। सांस ऊपरथळी आवण लागग्यो। पेट रो खाडो और डूंगो होग्यो। सूवटी फेर तो इनै बीनै भाजी, डोरा

जंतर कराया, झाड़ा झपटा लगवाया। पण टांवर दवतो ग्यो, अर गिणती रा ही सांस लीन्या।

सोनड़ी रोवंण लागगी, सिर पीटण लागगी। सूवटी एक सिसकारो सो मारयो। वा ज्यूं त्यूं कीं नीं बोली। पण बण मन में सोच्यो–'आछो रैयो, पाप को कादो हो, आगै सिर बांस आंवतो, थामतो ही दवग्यो, धांद कटी।'

पण सोनड़ी री निजर और तरियां ही, वा ईनै अपणै प्रेम रो फूल मानती ही जकै री सौरम जिन्दगी सागै जुड़ेड़ी रैंवती।

थोड़ा दिनां पाछै सोनड़ी रो बीन सोनड़ी नै लेवण आग्यो।
दूजै दिन ही सूवटी बीनै भीर कर दी।

सोनड़ी तो घर में बड़नै रोई, माचै पर बैठनै रोई, खड़ी रोई, फेर भीर होई जद जोर सूं डीडाई। पण सूवटी री आंख्यां भीजी तक कोनी।

बण लुगायां नै कयो—'टाबर आपरै घरे ही आछो, स्यात बीरै सिर माथै बोझ हो जको उतर ग्यो।'

सोनड़ी तो बसबसियापाटती ऊंट पर चढ़ी। इसी लागै ही जाणै कोई डूंगी पीड़ ही जकी कदेई नीं मिटैली।

सामैसूं आयूणी पून चालै ही, ताती अर कसूण भाळी।
आगै बैठयो भरतार ऊंट नै इकलंग टोरै हो—टच, टच।

ऊंट री बीख सागै लेरै बैठी सोनड़ी रो जीव धड़कै हो—धक् धक्।

सोनड़ी पीर रा रूंख लेरै स्यूं झांक-झांक देखै ही। वा सगळो साथ छोड़नै जावै ही। एक ऊंचो टीबो आयो। ऊंट होळै-होळै ऊपर चढ़ण लागग्यो।

सोनड़ी अेकर ओजूं लारनै देख्यो। फेर ऊंट टीबै री सिखर

पर आयो। सिखर सूं ऊंट नीचै ढ़ळ्यो। गांव रै रूंखा रा पैली पेडा लुक्या फेर बिचाळो, फेर टबरा लुकग्या।

सोनड़ी सगळी यादां समेटनै काळजै अर पेटी में मेलली।

ओजूं तांई कँवर रो ल्यायेड़ो तेल, साबण अर अन्तर बींरी पेई में सावत पड़्या हा।

ठिकाणो

चिमनसिंह गढ़ रै कांगरा कानी टुकर-टुकर देखै हो। कांगरा एक कानी खंड्या पड़्या हा, भींत में एक पाधरी तरेड़ चालरी ही। ठाकर किता दिना सूं सोचै हो कै जे आंरी मरम्मत हो ज्यावै तो विरखारो पाणी मांयनै नी जावै अर ना आं भूंडी लागै। पण फेर सोचै हो कै ई जूनै फूट्यै टापरै नै कठै कठै सूं सुंधारै, क्यांसूं सुंधारै, पीसा तो लागै ही। माईत ही किसाक हा कै ओ भूत रो डेरो सो बणाय नै चल्या गया, कांई वैत सूं बणायो हो, आज रै दिन ओ भूंडो ढूंढो सो लागै है। पण ल्यो ठीक ही है, वैठण नै टापरो तो है। ठाकर अंकर मूंछ्यां पर हाथ मेल्यो, फेर आपरी सदा री बाण मुजब बानै मरोड़ी देवण लागग्यो। फेर सामै चूंतर पर देख्यो, खाडा पड़रचा हा जाणै मोटा-मोटा घाव पजरचा हुवै। जे अंधेरै में अणजाण चालै तो आखड़नै आपरो मूंडो फुड़ाय लेवै। आसै-पासै कूटळो खिंडरचो हो, सोच्यो नूपलो

आज ही कोनी आयो। हेलो मारयो, 'नूपला, ओ नूपला।' नूपलो होवै तो बोलै। बाई मंडेरै सूं बोली, 'नूपलो, आज ही कोनी आयो, पापा।' 'हूं' ठाकर एक ठरको सो दियो, फेर डूंगो अफसोस में गड़ग्यो, मन ही मन बोल्यो, 'नूपलो आज क्यूं आवै, भई।' फेर मन में तरण बंट हुयो, मूंछ्यां नै मरोड़ दीनी, फेर बाई री याद करनै मन पाछो पड़ग्यो, 'कित्ती बड़ी होगी मगेज स्यात् उणीसवों लागग्यो, कै बीसवों।' मूंछ्यां नै दोनां हाथा सूं ठीक जमाई। उणीसव, बीसवै में कई देर तांई माथो घूमतो रह्यो। बाई रै ब्यावरी तावळ सूं मन कीं भोर तरियां होयो, काळजो फड़कण लागग्यो, कुरसी री टांगां धूजण लागगी। कदेई ई गढ़ री डोढ़्यां पर हाथी पर होदै माथै चंवर ढुळया हा, घोड़्यां 'हणण हणण' हिण-हिणाया करती ही, बांरी गोल्यां 'खम्मा-खम्मा' करती ही, हुणं........! ठाकर लांबो सिसकारो मारयो, 'अबार नोपलो ही बस में कोनी, भंगी री जात।' एकर कमरै में पूठो घिरनै देख्यो, खूंटी पर बंदूक अर तलवार सामै टंगरी ही। एक कानी शेर री खाल। ठाकर मूंछ्यां नै एकर ओजूं मरोड़ी, फेर रावळै कानी चाल पड़्यो।

ठुकराणी फूस-भारी काढ़नै बेली हुई ही। 'चाय कोनी बणाई कांई ?', ठाकर पूछ्यो।

'बणाऊं हूं, कांई होरयो है ?' ठुकराणी कीं करड़ी होय बोली, 'बाई टाट री दूध काढण गई है।'

'इत्ती दोरी कियां बोली, भली आदमण,' ठाकर कीं निमतो बोल्यो, 'चावड़ी री घूंट प्यावै तो तेरी मरजी है।'

'दोरी तो इयां बोलूं हूं,' ठुकराणी कैयो, 'कित्ता दिन हुया, आपनै कैवता नै, आप कठेई निकळो, बाई रा हाथ पीळा करण।

है। सारै दिन वठ्यां मूंछां नै मरोड़ बोकरो हो, आ मरोड़ रैसी कित्ताक दिन ?'

'पैली तूं चाय प्यादे, फेर बात करस्यूं,' ठाकर टूटेड़ती माची पर बैठतै कैयो।

इत्तै में बाई मगेज कळसियै में दूध रो गुटको ल्याई, 'इत्तो सो निकळ्यो मां-सा।'

'इत्तो ही ल्या, चावड़ी तो उकाळ द्यूं', ठुकराणी चालनै कळसियो पकड़यो।

चाय पीणै रै बाद कीं जी टिक्यो जद ठाकर खंखारो करनै पूछ्यो, 'हमैं बोलो, कांई कैवै हा ?'

ठुकराणी बिना डांडी रै कप में चाय उसारण लाग री ही। ठाकर पैली देख्यो ठुकराणी कानी, फेर मगेज कानी। मगेज रो मूंढो चोवरो सो लाग्यो। 'काल तांई जकी गोद्यां में खेल्या करती हो, अबार कित्ती मोटी होगी है,' ठाकर मन में सोच्यो। ठुकराणी री चाय अजूं ताई नीवड़ी कोनी ही। नीवड़तां ही बोली 'हूं कैवै ही, थे ठाकर पनैसिंह कानी जावण री कैवै हा, दिन बीत्यां बगै है, अेक अेक पल भारी होरयो है, फेर कद जावोला।'

मगेज उठनै मांयलै पासै चली गई ही। ठाकर कयो 'आजकाल में जास्यूं, जाणो तो पड़सी ही।'

'इत्ती मोटी टाबर घरै बैठी मूंडी लागै, दुनियां कांई कैसी थानै फिकर ही कोनी,' ठुकराणी बोली 'आपणै सुलतान लिख्यो है बो टावर तो देखल्यो।'

'सुलतान तो है बावळो,' ठाकर नै कीं ताव आग्यो, 'बो घर म्हानै पसन्द कोनी।'

'कांई खोट है वीं में ?', ठुकराणी पूछ्यो ।

'खोट यानै वेरो कोनी, हूं जाणू हूं, ठाकर कंयो ।

'कांई है, बताम्रो तो सई, ठाव लागै', ठुकराणी पूछ्यो, 'सोळा किलास पढ्योड़ो, आछी नोकरी है, पांच सो रिपिया लेवै है, जीप चढ्ण नै है, हलकै रो अफसर, कांई चाईजै ओर, घणो मांगै ही कोनी ।'

'म्हारै विचार में ये कीं नी समझो,' ठाकर कीं ओर मूंछ्या मरोड़तो बोल्यो, 'टाबर बीं घर में जावै, सीधा हळाहळ है, पाधरा गोल, वर हीण हो चाहे, पण घर हीणो नी । ठाकर चिमनसिंह रो टाबर पनियै रै घर में, ईं सूं आछो है टाबर नै डूंगै जहर में गेर द्यूं ।'

ठुकराणी रो मन पाछो पड़ग्यो । लैरली वार जद सुलतान छुट्टी आयो हो जद पनैसिंह रै लड़कै री घणी बडाई करी ही । बणं तो आई कैई के आपणी मगेज भोत सुख पासी मा सा । पण ठाकर मानै जद हुवै । कांई पड़ची है आजकाल ठिकाणा में । ठिकाणा में तो काग बोलै, कुत्ता भूसै । आ ही वात वण ठाकर नै कैई ।

ठाकर फेर गरमी में आयनै बोल्यो, 'थांरा म्हारा बाप कांई हा, जाणोक नी । बी घर री नाक काटणो चावो हो आप । सौनै रा कड़ा बक्सेड़ा हा दरबार रां । बां घरां री माटी छेतोला कांई ?'

ठुकराणी फेर सिसकारो मारयो । ठाकर माथो थामन कोटड़ी में चाल पड्या ।

ठाकर दूजे दिन पिचरंगियो साफो बांधनै चाल पड्या । ठिकाणा में घूमण लागग्या । टाबरां री कांई कमी ? पण कमी जंड़ी ही बा तो ठाकर रै घर में ही । 'कांई देख्यो टीकै में, म्हारो

टावर अवार डाक्टरी में भणे है, म्हे तो पूरा पांच हजार लेस्यां, बीस हजार फेर लगाणा पड़सी। त्यार हो ज्याग्रो, दूजे ठिकाणे रो टावर सोळवीं में पढ़े, बिलायत रो खरचो और देग्रो। तीजे ठिकाणे में टावर तो ग्यारवीं में है, पण ठिकाणे रो मोल मोकळो देणो पड़सी, चालीस हजार सूं कम तो ग्रोपे ही कोनी। होणे घर तो टावर जावे हो कोनी।

ठाकर पाछो घरे आग्यो। मन मारने पड़ग्यो। ठुकराणी पूछ्यो, 'कांई कर आया ?'

ठाकर कैव तो कांई कैवे। बारे निकळ्यां ठाव लागे के दुनियां कित्ती बदळगी। ठाकर नै ग्रो बदळाव आछो कोनी लाग्यो। पण बेटी नै तो ब्यावणी है ही। ठुकराणी अेकर ओजूं समझायो के आपां टावर आछो देखां, ठिकाणा में कांई पड़्यो है। सुलतान रो ग्रोजूं कागज आयो के पतजी रो टावर त्यार है। वो म्हारो आछो भायेलो है। आपणो टावर अठे ही ओपेलो। पण ठाकर तो पतजी रे नाम सूं ही चिड़े हो। ठुकराणी बिचारी लुगाई री जात। बा करे तो कांई ? ठाकर री अकल दुनियां सूं न्यारी ही।

सुलतान आ दिनां छुट्टी घरे आयो। बिण फेर जोर देय नै कैयो, 'पापा, आपां गलती करां हां, जमानो घणो बदळग्यो है। हणे ठिकाणे कानी मत लुळो, टाबर देखो टावर।'

ठाकर रीस करी अर कैयो, 'तू पतियै र टावर खातर कैंवतो होसी। तू जाणे है के पतियो खुद कांई है। बो कठे ब्यायो है, पतियै रा मां-बाप कांई हा। हूं लारलो सो इतिहास जाणूं हूं। तू कांई जाणे काल रो छोरो। मोटा बण्या है तो हणे बण्या है।'

'पापा हण तो मोटा है बे, घर में रंग लागरेया है, भेस्या

दूजण नें, जमीन वावण नें, आछी नोकरी है, पढ्यो लिख्यो है।'

ठाकर रै आग-सी लाग गो। बोल्यो, 'होगा हुणै मोटा। लारळो पासो सम्हाळ। मगेज नें ईं ठिकाणै देऊं तो मनें ठिकाणां में बोलण कोनी देवै। लोग मूंछ्यां रै भाटा वांध देवै। तूं समझै है के नी। म्हारो होको पाणी वंद हो ज्यावै। तूं कांई जाणै आ बातां नैं।'

मां-बेटा आप कानी स्यूं समझाय धापग्या। पण ठाकर री अकल तो वठै री वठै ही।

ठाकर अेकर मोजूं निकळ्यो। ठिकाणा में ठिठ होवण लाग्यो। ठिठ री वात तो इयां है कै जठै टावर चोखो है, वठै आछो ठिकाणो नी, जठै ठिकाणो है वठै टावर में धूड़ रो दाणो नी। पण ठिकाणो तो देखणो पड़सी हो। टावर भूख में जावै आ वात भी ठीक नी। ठाकर नैं अपणो घर भी देखणो पड़सी। काम तो कोई करै जको पोस वै। स्याणो टावर घर में किता दिन वैठ्यो रैसी। ठाकर रो काळजो कटण लागग्यो। आखर ठाकर नैं एक टावर दाय आग्यो।

ठकुराणी ठाकर नैं आंवतां ही पूछ्यो अर ठाकर बतायो, 'हूं टावर देख आयो, आछो ठिकाणो, आछो टावर। की मोटो तो है ही। पण ठिकाणो विसवा बीस है।'

फेर अेक दिन बाई रै तेल चड्यो। बसंत-पांचूं रो ब्याव थरपीज्यो। विनायकजी नैं याद कर्‌या। रंग चाव सरु होग्या। सुलतान छुट्टी आयग्यो। वाप वेटो आजूं-आज होयग्या। दिन छिपतां ही छोर्‌यां भेळी होव ज्यांवती, 'आग्रो वनड़ी गांवां,'— 'म्हारी ए वनड़ी·····मा रै कोड री कमी कांई ? ····· 'तंई अे तेलण

तेली"''गीतां री सूकड़ उमड़ती । घर रो रंग ही वदळग्यो, गढ़ गरणाण लागग्यो, ढोलो ढोलण आयग्या हा ।

बसंत पांच्यू र सागण दिन टीवें रै ओलै सूं बारात आंवती दीखी । बंदूका खड़की, बीण बाजा बाज्या । डागळे माथै गीत गरणायो—'मोरिजे अे मा'

आथण नै ढुकाव सरू । बीन डूक्यो । मगेज रो मा दही देवण गई । आंख्यां धरती कानी झुकी, माथो तरणायो । छोर्यां में फुसफुस हुई, 'बीन तो बूढो ।' लुगायां जिकर सरू कर्यो, 'सांपखाधै ओ कांई देख्यो, दूजवर है कांई ?' आदमी ओलै-सी बोल्या, ठाकर री मत मारीजगी । छोरी नै सीड़ी रै बांध दी ।'

ठुकराणी री आघी ज्यान निकळगी ही । गोडा में चीस चालण लागगी, जाणे सत ही निकळग्यो । कैवै तो कीनै कैवै, कैयां सूं बणै भी कांई । छोरी रो भाग ही इसो हो ।

फेरां में छोर्यां हांसे ही, 'बीन नै खांसी कियां आवै है ।' लुगायां गीत गायो—'पैलो अे फेरो, दूजो फेरो, तीजो अर चोथो ।'

बाई पराई होगी ।

ठुकराणी मांय पड़ी सिसकारो मारै ही । दिनगै उठी जद देख्यो—'ठाकर मूंछ्यां ताण्यां पावणा कै न्यारो ही बठ्यो हो । थोड़ो पछै जद वगत मिल्यो, ठुकराणी भिड़क्यो, 'ओ कांई करघो थे· डावड़ी नै डबोयदी, ई ऊं तो आछो हो ईनै जैर देव देंता, अै दिन तो देखणा कोनी पड़ता ।'

ठाकर मूंछ्या नै मरोड़ नै बोल्यो, 'ठिकाणो है, ठिकाणो, तूं कांई समझै ?'

ठुकराणी रीस करनै बोली, 'धूड़ थांकै ठिकाणै में ।'

अेक बूढ़ी चमारी अक कानी बैठी बोली, 'अबार अफ़सोस सूं कांई लाभ' ठुकराणी सा। थांरला सूं तो म्हांरला ही आछा। पण खैर ! विधग्या सो मोती।'

ठाकर रो माथो घूजण लागग्यो। मूंछां रे भाटा-सा बंधग्या। खाट पर खड़्यो ही पड़ग्यो, जाणे कोई मोटो कुकरम कर दीन्यो।

चूनकी री माँ

'बो पोठो मेरलो'

'बा भैंस मेरली'

'बा गाय मेरली'

गरमी री ताती लूआं में पीपळ रै रूंख री छाया में कई छोरयां पोठा चुगै ही। कनै ही जोड़िये में थोड़ो पाणी भरयो हो। पीपळ रा पान सूं पान जुड़ रैया हा जीसूं रूंख री छायां सूरज री ताती किरणां सूं बचाव करै ही। छोरयां रो इकलंग ध्यान छायां में बैठी भैंस्यां गायां कानी हो। कीं भैंस्यां पाणी में पड़ी ही। वांरै निसरती नै देखताई छोरी बोल देती 'बा भैंस मेरली' बीं भैंस रो पोठो बीं छोरी रो ई होंवतो, इसो वांरो आपस रो समझौतो हो। कोई भैंस अर गाय पोठो करणै खातर आपरो पूंछ ऊंचो करती तो छोरी वीं पर आपरो धणियाप कर लेवंती, 'वो पोठो मेरलो।' छायां में बैठ्या ऊंटां रा मींगणां नै छोरयां चुगै ही। चूनकी वां छोरयां में अेक ही।

वींयां तो चूनकी री ऊमर बारा-तेरा साल सूं ऊपर कोनी ही, पण वातां री समझ चूनकी नें आगी ही। फाट्योड़ै गाभां में भी छोरो फूटरी लागै ही। खिडचोड़ै झींटा में भी गोरो मूंढो दीसै हो। कुड़तियो लीरा-लीरा होरयो हो, पण भरवां सरीर जचै हो। घाघरियै री जगां ओजूं तांई चूनकी कच्छो ही पैरै ही। पीपळ रै पेडै कनै बण आपरा पोठा भेळा कर राख्याहा। कनै वैठी ही, पण वींरी इकलंग टो छायां में बैठी गायां, भैंस्या कानी ही। इत्तै में अेक भैंस पाणी सूं नीकळी। चूनकी बोली, 'वा भैंस मेरली।' पण बीं वगत ही अेक छोरी और बोली, 'वा भैंस मेरली।' हमैं दोनूं छोर्‌यां बीं भैंस रै पोठै पर आपरो घणियाप जमा लियो। भैंस वारै आई अर् पोठो करणनै लागगी। चूनकी कनै जायनै खड़ी होगी, बा छोरी भी कनै आगी। हमैं लड़ण लागगी दोनूं। "पोठो मेरो", चूनकी बोली। दूजी बोली, 'पोठो मेरो।'

न्याव करै तो कुण ?

कनै खड़ी छोर्‌यां तमासो देखै। कोई बीच-बचाव करै नी। गाळमगाळ अर गुत्थमगुत्था। ईं'री चूंडो बींरै हाथ अर वींरो चूंडो ईं'रै हाथ। पाछै जांवतां दूजी छोरी अेक बात कैयदी, 'वे बाप री रांड, आईं है अठै पोठै री धणियांणी।'

चूनकी आ बात पैली कई बार सुणी ही। छोर्‌यां सूं कदेई चूनकी लड़ लेती तो छोरी-छोरा आ ही गाळ चूनकी नै काड देंवता। पण आज आ बात बींरै काळजै में कांटै ज्यूं चुभगी। बा तड़फण लागगी, 'मनै वे बाप री कियां कैयी।' चूनकी बींरो चुटलियो तो छोड़ दियो अर बिना पोठो लियां ही पेडै कनै आय बैठी, उदास-उदास, फीकी-फीकी, मन मार्‌योड़ी-सी। कनै खड़ी छोर्‌यां-सोची, चूनकी हारगी। पण आ हार तो घणी जोर री ही, बात रै बाण री चोट सगळी चोटां सूं घणी मार करै। चूनकी री

यान हमैं न की भैंस कानी ही, न कीं गाय कानी। घणीं देर तांई चूनकी बैठी-बैठी आंख्यां भरली फेर गोबर नैं च्यारूं कानी खिडा-नैं घर कानी भाज चाली, तातो धूड़ में बींरा ऊभाणा पग वळ्या कोनी।

चूनकी री मा घरे कोनी ही। वा तो गई ही खेत में घास री भारो ल्यावण खातर। गाय आथणगैं भूखी थोड़ी ही रैंसी। चूनकी री भाई भूरियो सेठ धन्नाराम रैं मजूरी गयो हो। दूजैं दिन री नाज वीरी मजूरी सूं हो तो आणों हो। चूनकी पोळी में बैठी बसबसिया पाटती रैई। थकनैं ठीकरयां सूंई खेलणनैं लागगी।

ढळनैं दिन रो सूरज की फीको पड़यो जद चूनकी री मा घरे बावड़ी, घास रो भारो सिर पर, उठायैं नीचैं पटक्यो, लांबो सांस लियो, माथैं रो पर्स.नों पूछ्यो, फेर बैठ'र आधी टांगां आगैं नैं पसारली, कीं जी में जी आयो, जद विण पोळी कानीं देख्यो, चूनकी बैठी ही। हेलो मारयो, 'चूनकी, ऐ चूनकी।'

चूनकी पूठ फेरयां बैठी ही रूसेड़ी-सी, बोली नी। चूनकी री मा फैर हेलो मारयो "चूनकी, ऐ चूनकी, आज किताक पोठा ल्याई ?'

चूनकी बसबसिया पाटणनैं लागगी, मूंढो गोडां में छिपा-यन रोवण-सी लागगी।

मा बेटी रैं सुभाव नैं जाणती ही। बा तड़कनैं बोली "सांपड़ैंखादी कुळछणी, क्यूं सूंसारै है, आज पोठा ल्याई कोनी दीखं।"

चूनकी मा री रीस सूं कांपण लागी। मा नैं आप कानी आंवती देख'र बोली, "मनैं फलाणती गाळ काढी, बाप री गाळ, मनैं रीस आगी।"

'तो गोबर फेंक दियो तू ?" मा रीस करनैं पूछ्यो।

'हां, मा'', चूनकी रोंवती रोंवती सारी वात बतादी।

मा बेटी रै अेक थप्पड़ चेप दियो।

चूनकी रोंवती रेई, रोवती रेई। पण मा रो मन फीको बा चूनकी री ड़ूंगी वात नै समझै हो।

अंवारै ऊतरणै सूं पेलो हां चूनकी मांचै पर जा सूई। खीचड़ी ठारणै सूं पला ही बींनै नींद आगी ही। मा खीचड़ो खाणै खातर बेटी नै घणी घोतळी, पण चूनकी नींदा में ही, बंकती रेई, 'बाप री गाळ काडी'। भूरियो खासा थक्योड़ो हो, खीचड़ो खांवतां ही नींद आगी, ऊपर।कर फिरगो। मा चूनकी रै सारै ही पसरगी। ईं'नै वींनै पसवाड़ा फेरै, पण नींद नी आवै। खूं-खूं करती आंधी चालण लागगी। तारा लुकग्या। रात भोत कोझी-कोझी लागै।

चूनकी री मा री नींद उचटगी ही। बीरी पुराणी बात ताजी होगी ही। पन्दरा साल पैली बीरो रूप भरयो जोबन, रंडापो ले लियो हो। आगै-पाछै च्यारूं कूंटा अंधारो। च्यानणो हो, कै तो थोड़ो-घणो भूरियै रो, कै बींरी जमीन रो। बण ईं आसरै पर जी टिकायो। भूरियो तीन साल रो हो, कीं जी जम्यो कै ईं जमीन रै पांण बेटै नै मोटो कर लेसूं।

चूनकी री मा फेर पसवाड़ो फेरयो अर चूनकी फेर नींद में बरड़ाई, 'बे बाप री बेटी।'

मा बेटी पर हाथ मेल दियो। पुराणी बातां माथै में घूमणनै लाग गी। दूजै साल भी काळ पड़ग्यो—च्यारूं कूंटा काळ, अेकर छांटां पड़ी, दाणा जका हा घर में, बै खेत में गेर दिया, फेर इकलंग पिछवा चालो। धूड़ सूकगी। मालौड़ो बळग्यो, धान जगां ही मरग्यो। चूनकी री मा रो काळजो हालग्यो। मिनख तो सो जगां फिरै, उळटपुळट करै, पण लुगाई री जात, जावै तो कठै। मीनां-दो मीनां उधार सूं काम काढ्यो। पण उधार चालै तो कद

तांई। उधार देवण माळो देखे के ऊपर सूं तो काळ पड़रयो है. सेर दाणां रो आस कोनी। अगलें साल रो कांई वेरो-पाटै, पैली घर रो जावतो करणो पड़ै। ईं कारण अेक दिन इसो भी आयो जद चूनकी री मा नै उधार मिलणों बन्द होग्यो। अबै, दिन कियां निकळै। काया तो आपरो भाड़ो मांगै ही। च्यारूं कानी अंधेर गुप्प। दिन निकळणो दूभर होग्यो। भूरियो भूख सूं करळाण लागग्यो।

चूनकी री मा ओजूं पसवाड़ो फोर्‌यो, चूनकी ओजूं बरड़ाई "वे वापरी रांड।"

पुराणी वात रो जोड़ चूनकी री मा रै माथै में ओजूं जुड़ग्यो। भूखी मरती चूनकी री मा तो पड़ी रैती, पण भूरियै कानी सूं काळजो बळै। टाबर नै भूखो मरतो कियां देखीजै। झख मारनै चौधरी रामधन कनै गई। सोपै रो टेम, रामधन गुवाड़ में सूत्यो, अेकलो मांची पर। मोटी काया नै पूरी पसार राखी, पेट पर हाथ फेरै। चूनकी री मा चौधरी रै लखणा नै जाणै पण आ भी जाणै कै आखै वास में जे कोई देणदार है तो रामधन ही है, वाकी तो भूख रा कड़ाका काढै।

"चौधरी भूख रा दिन काढूं, टाबरियो वरळावै है, देखीजै कोनी। तेरै आगै पल्लो पसारूं हूं। काळ रा दिन निकळ्या तो फेर सारै कोनी।'हूं", रामधन अंधेरै में चूनकी री मा री सूरत देखण लाग्यो। रामधन सूं ओ रूप छानो कोनीं हो। धन भाग, आज ओ रूप ईं गुवाड़ मे आयनै खड़्यो होग्यो। "आटै री चिमटी घरे कोनी, हूं तो भूखो रैय सकूं हूं, पण भूरियो...... ...", चूनकी री मा आंसू पूंछण नैं लागगी।

रामधन डूंगी मांस्यां फाड़णनै लागग्यो। वोल्यो "इसै रूप री धणियांणी अर भूखी मरै।'

चूनकी री मा बांही पगां पूठी बावड़गी। घरे गई तो भूरियो नींदां में उचटे अर रोटी मांगे, भूरिये री मा काळी रात में तारा गिणे, काळ री रात भी घणी कोफी हुवै, भूतणी-सी डराणी ।

अड़ोस-पड़ोस मऊ चल्या गया हा । च्यारूं कानी ऊजाड़ ही ऊजाड़ । घरां रै भीटक्या लागरचा हा । काळ रा कुत्ता भी घणां कुकाणा कूकै, जाणै सगळै भूत भूतणी रो वासो होग्यो हुवै ।

चूनकी री मा ज्यूं-त्यूं मौत नै अडीकण नै लागगी । ईं सूं तो मौत ई आछी । पाछला दिन याद करनै कूकणै री कोसिस करी पण भूरियै नै देखनै मांय ही मांय घुटकी ।

आधी रात पाछै आंख जपी तो बारलै दरवाजै रो कूंटो खड़क्यो ।

"कुण होसी ?"

"हूं,"

'कूंटो खोलूं की खोलू ?' चूनकी री मा बोली पीछाणगी, 'क्यूं आयो है रामधन", तेरै रूप, भूखो, रूप······ भूख····· भूख भूख······ भूख, रो मेळ ।"

फेर कूंटो खड़क्यो ।

भूरियो, भूरियै रो पेट, पेट री आग, आंसू, रोटी—मा ··· रोटी····मा····रोटी, दिन भर करतो रैयो भूरियो··· अेकली आस, फेर कुण होसी ।

फेर कूंटो खड़क्यो । खट्·····खट् · खट्

चूनकी री मा मूंढै पर हाथ फेरचो छाती पर हाथ मेल्यो, कांचळी सूं तण्योड़ी छाती, फेर पेट पर हाथ गयो, फेर नीचै नै । पेट में खाडो पड़ग्यो हो, पेट कित्तो थोथो है, सारी काया रो स्रोत पेट, काया नै राखणो है भूरियै खातर, भूरियो राखणो है काया

खातर। कुदरत रो खेल है ओ।

आंधी सांय सांय चालै हो। तारा कठै हो कठै चिमकै हा। काळ रो कुराणों रूप कित्तो भेंडो हो।

खट्, खट्, खट्

"माई।"

चूनकी री मा खड़ी होगी।। कूंटो खोल दियो। रामधन अेकलो कोनीं हो, सागै भूरियै अर भूरियै री मा खातर पूरो जुगाड़ हो।

"तेरो दुख देख नी सक्यो, भूरियै री मा।"

"साची बात है स्याणों।"

फेर ?

…………जर्क दिन चूनकी रो बीज पेट में जमग्यो।

लोग चूनकी नैं गाळ कै काढै, बात तो साची है। चूनकी री मा फेर चूनको पर हाथ मेल्यो, वा निधड़क सूती हो, भूरियो दूजै मांचै पर सणक-सणक नींद लेरैयो हो। वेगो ही ब्याह कर देसूं ई रो, अेक मीठो गुटको-सो। चूनकी री मा रो मूंढो मिठास भरग्यो। बीनैं नींद आवणनै लागगी।

धरती री रंग

••

किसनो विचारो ठेठ गांव रो मिनख, मोटो पेरै, मोटो खावै। झांझरकै उठै, सोपै सोवै, दिन में ज्यूं-त्यूं खेत में रेवै। गांव आळा कैवै, 'किसनो रोही रो जिनावर है।' किसनो रोही रो जिनावर तो हो ही। रोही रै जिनावरां सो भोळो-सूधो। मिनख सूं चिमकै, डांगरां में रैवै। कै तो वो, आपरी सांढ रै सारै रैवै, कै गावड़ी रै। बाजरड़ी, मोठ बा देवै, वां कानी देखतो रेवै। ज्यूं-ज्यूं वै ऊपरनै आवै, वींरो मन भी ऊपरनै आवै। जे वै फीं वळणनै लाग ज्यावै तो वींरो काळजो भी वळणनै लाग ज्यावै इसो हो किसनो।

पण, किसनै री जिदंगी में कोई रोळो-रप्पो कोनी आयो। अेक सीधी-सपाट जिदगानी रैयी किसनै री, न जेठ सूखो न सावण हरी। आपरै टाबरियां नै पाळतो अर आपरी ख्याल में मस्त। न मिनखां में बैठतो, न बात करतो। बातां वींनै आंवती ही तो कोनी

भापरी अेक चिलमड़ी राखतो, तंबाखू राखतो सागै । भर लेंवतो भर पी लेंवतो । चिलम वींरी अेकलै री साथण ही । घरे आंवतो, रोटी खायो'र पड़ ज्यांवतो भर नींद ऊपर कर फिर ज्यांवतो । भड़ोसी-पड़ोसी कैंवता, 'धान रो कोठलियो है किसनो तो ।'

किसनै आपरै गांव नै देख्यो हो भर गांव में देख्यो हो अेक थाणो, थाणे में अेक भफसर थाणेदार । मुंसी-मल्लाह, पटवारी, सिपाही, राज रा भहलकार हो खुदा रा मोटा सूं मोटा बचिया हा ।

किसनो कदै ही कदै सहर जांवतो, आपरो नाज बेच देवतो गुड़-मीठाण ले आंवतो । पण सेठ री दुकान सूं बत्ती वीरै कोई सेंध-मेंध कोनी ही ।

पण किसनै री जिंदगी में अेक भूंचाळ आयो । भूंचाळ आयो तो इसो कै वीनै कचेड़ी देखणी पड़ी । किसनै रै खेत रो पड़ोसी आपरी जमीन बेच बैठ्यो अेक सिख नै । सिंख हो पूरो भाड़ू । रोज बीरै सागै खेंची राखै । कदै गावड़ी बाड़ देवै खेत में तो कदै सींव कुचर लेवै । किसनै सावळ समझायो, भाड़ौस्यां-पड़ौस्यां सूं कुहायो, पण किसनो हो सीधो-सादो । बण समझ्यो, 'हूं किसनियै नै दबा लेसूं ।' जमीन तो खेतीखड़ री ज्यान हुवै है, ज्यान सूं भी प्यारी, ज्यान चली जावै पण करसो जमीन नी जावण देवै सिख धवकै सूं किसनै री जमीन दबाली । किसनो पटवारी नै ल्याभ्रो, पंच बुलाया, बां आप कानी सूं ठीक करा दिया, पण सिख मानै कियां । सिख भाव देख्यो न ताव, कचेड़ी में मुकदमो कर दियो । किसनो कचेड़ी रो नांव सुण्यो हो, पण कचेड़ी देखी कोनी ।

किसनै रै सामनै मुकदमै री तारीख भागी । दिन ऊगणै सूं पैलो ही किसनै री बू बाजरी री रोटी रो चूरमो चूर दियो,

अेक रोटी बांध दी, सागै लूण-मिरच। किसनो आपरी सांढ पर चढ़नै कचेड़ी कानी चाल पड़यो-पड़ौस रै सैर में कचेड़ी ही।

कचेड़ी लागणै सूं पैली ही किसनो कचेड़ी रै सामनै जा बैठ्यो। मुकदमो तहसील में तहसीलदार सामैं हो। किसनैं नीम रै दरखत रै नीचै आपरी सांढ नैं बिठाय दी। सांढ सूं पिलाण उतार दियो। चारै रो बोरो सांढ रै आगै मेल दियो। आप खुद आपरी रोटी संभाळ ली। सांढ नीरो चरण नैं लाग गी अ'र किसनो गिलासियै में प्याऊ सूं पाणी लेयनैं जीमण नैं बैठग्यो। किसनैं पींडियो खायो, फेर रोटी पर मिरच घालनैं खा ली। ऊपर पाणी पी लियो।

फेर किसनो कचेड़ी कानी इकलंग देखण नै लागग्यो। बींरो काळजो धड़क-धड़क धड़कण नैं लागग्यो। आंज ईं कचेड़ी में ईं री तारीख है। मोटो अफसर है तहसीलदार, थाणेदार, मुंसी, पटवारी सूं भी ऊंचो। बीरै सामनै बोल कियां आसी।

किसनैं आपरी चिलम बारै काढी। जेब में मूंजेवड़ी ही। मूंजेवड़ी गोळ बणाली, फेर बीरै माचिस लगा ली। अधबळी नैं चिलम री तंबाखू पर मेल दीनी। अेकर जोर सूं सारी, धूंमों फेर निकळ बोकरचो, पण काळजै री धड़कण बींयां ही रैयी, मिटी कोनी।

धीमै-धीमै कचेड़ी में मिनख भेळा होवण लाग्या। पूरै टैम पर कचेड़ी मिनखा सूं भरगी। कचेड़ी बींनैं अपरोगी-सी लागै-ही। भोजूं तांई सिख आयो कोनी हो। बण सारै बैठ्यै अेक आदमी सूं जाणकारी काढ़ी, बेलो बैठ्यो आदमी करै भी कांई। बण फेर पूछ्यो "तहसीलदार आयो कोनी?"

'अबार आवण आळो है।'

फेर दोनूं मुकदमै री बातां करण लागग्या।

इत्तै में तहसीलदार आवंतो दील्यो। वो आदमी बोल्यो "ओ है तहसीलदार।"

"ओ है तहसीलदार।", किसनै पूछ्यो। किसन की ध्यान सूं देख्यो, सैंदो सैंदो लाग्यो, भरवां सरीर रो, गोरो निकोर, सूट बूट पैरयोड़ो।

"ओ हो", किसनै पिछाण लियो, 'ओ तो हुकमसिंह थाणेदार रो छोरो मंगळ है। मंगळ जको म्हारै घरे आया करतो, खेत में चल्यो जांवतो, हूं ईनै मतीरा तोड़ नै खुवाया करतो।' आ बात वण आपरै कन्नै बैठ्यै आदमी नै कैयी। 'अरै भाई", वण कैयो, "आज क्यांरी सैंध-मैंध है। पीसो चाईजै पीसो। विना पीसै कोई मूंढै सूं ई कोनी बोलै, बात तूं पिताय लेई।"

"ना रै, ईसी बात होया करै है, थाणेदार म्हारै सारै रेया करतो। बींरी लुगाई म्हारै घरे आवंती, म्हारै मठै सूं फळी, काचर ले ज्यावंती।'

वो आदमी फेर हांस्यो, बोल्यो, 'तू तो भोळो आदमी है, भाया, ठेठ देहाती लाग्यो, रोही रो रूंख।'

किसनै नै आ बात जची कोनी। किसनै आपरी सांढ नै नीम रै पेड़ै में बांध दी। आप कचेड़ी रै सारै आ लाग्यो। तहसील दार रै कमरे र आगै चिक लागरैयो हो। आगै कुरसी पर बैठ्यो हो चपड़ासी। किसनो चिक रै आगै खड़्यो होग्यो। चपड़ासी झिड़क दियो। "परनै बैठ, आगै मत खड़्यो हो, अफसर लड़ैगा।"

किसनो परनै खड़्यो होग्यो। वो इकळंग चिक कानी देखै, जो कर ई चिक नै फाड़नै मांय चल्यो जावै, फेर मंगळ सूं मिल लेवै। तहसीलदार, मोटो हाकम, बींरी तकदीर रो मालिक, आज रै दिन, का तो मंगळ है अर कै भगवांन। पण भगवान नै कणी ही देख्यो कोनी, मंगळ सांपड़दै खड़्यो है। वण आपरै मन में कई

वार भगवान रो नाम लियो अर मन हरख सूं फूल ज्यूं खिलग्यो।

चपड़ासी जद पार नहीं पड़णन दी तो बो पाछो आवरी सांढ संभाळण नें चल्यो गयो। सांढ नें तावड़ो आवण लागग्यो है, वण छायां में बांध दी। आपरै चिलम री मन में आयगी, चिलम भरी अर् पीवण लागग्यो। ईनें बीनें देख्यो जे सिख आयग्यो हुवै। कठेई दीख्यो कोनी। बीनें कीं ठा हो के सिख आज नी आवै लो, वीर पाणी री वारी है।

फेर किसनो बी चिक कानी गयो। चपरासी ज्यूं रो त्यूं बठ्यो हो। वो पनें बेठनें पूछ्यो, 'क्यूं भाई, म्हारै मुकदमै रो दूजो आदमी तो आयो कोनी, म्हारी तारीख पड़ेली।' 'मनें बेरो कोनी', अकड़नें बोल्यो चपड़ासी।

किसनो चुप रैयग्यो, चिलम री फेर मन में आयी, पण पी ई कोनी।

'मनें कियां पतो लागसी।"

"हेलो होवैलो', चपड़ासी कैयो', म्हारी मत ज्यान खा, जा जा परनें, अठै क्यूं बेठ्यो है ?"

किसनो परनें चल्यो गयो। ईनें-बीनें फिरै बिरायोड़ो डांगर फिरै ज्यूं, जी नी टिकै।

घणी देर पाछै किसनै नें हेलो हुयो, 'किसनो जाट हाजर है।"

किसनो भाजन गयो।

"हाजर हूं सा।"

"पेसकार कनै चाल" , होळै सी कैयो चपड़ासी।

किसनो मांयनें गयो। पैली तहसीलदार कानी देख्यो, सागी है मंगळ, जी कर्‌यो कनै चाल, पण डर लागै। सारो ही माहोल वींनें ओपरो सो लाग्यो, ज्यूं डर भर रैयो है सारी हवा

में। मिनख फिरै जका डरावणा भूत-सा लागै। जांणै आ दुनियां नी जकै में बो बसै हो, स्यात् अेहो हुवै नरक, अर अै सारा जमदूत। किसनै जद इयां बिडरायोड़ो-सो खड़्यो रैयो तो चपड़ासी आयनै झिड़क्यो, 'तू मिनख है कै डांगर, पेसकारजी कानी जा।'

किसनै रो होस ठिकाणै आयो, बो चपड़ासी सागै पेसकारजी कानी चाल्यो अर आपरी तारीख ले ली। बीस दिनां पाछै मोजूं ई तहसील में आणो है।

किसनै अेकर मोजूं मंगळ कानी देख्यो। बो तो काम में लागरैयो है। मुकदमै री सुणवाई होरी ही। मंगळ ऊंचै चूतरै पर कुरसी ढाल्यां बैठ्यो हो, च्यारूं कानी लोह री वाड़ ही।

किसनो बारै आयग्यो।

कचेड़ी रो आज रो काम तो किसनै पूरो कर लियो, पण जीव जद टिकै जद ओ मंगळ सूं मिल। पण मंगळ बीनै काई पिछाणै हो। आ मन में सोच नै चालण री सोची। सांढ नै जेकाई, पिलाणमांड्यो, फेर बोरो घाल्यो, गूदड़ो घालनै तंग खींचनै पिलाण रै जेवड़ी रो जंत लगा दियो। सांढ अेकर अरड़ाई। किसनै सोच्यो अेकर चिलम तो पील्यां, फेर चालालां।

दिन खासा ढळग्यो हो, पण सूरज रो तेज कम नी होयो हो। तावड़ो आकरो पड़ै हो। नीम री छांव में भी धरती सिलगै ही। किसनो फेर सुस्ताग्यो।

इत्तै में पतो लाग्यो कै कचेड़ी उठगी। तहसीलदार भी आपरी कोठी में जावैलो। किसन रो विचार बदळग्यो। बो इकलंग चिक कानी देखणनै लागग्यो।

चिक उठी, तहसीलदार बारै आयो, यानी मंगल। सागै, बो सागी चपड़ासी अेक ट्रे में की कागद लियां। बारै बैठ्या मिनख खड़्या होग्या, सलाम बोलै, तहसीलदार होळै-सी हाथ

हुलावै, पण कानी नी देखै।

किसनै रो जी ओजू हाल्यो, मन में सोच्यो, 'भोळो है किसना तू कांई देख्यो अठै, आ दुनियां है, अठै भांत-भांत रा लोग है। ओ मंगळ वो मंगळ कोनी जको तेरै अठै आय मतीरियो खांवतो, ओ हुणै मंगळसिंह है, तहसीलदार राज रो जकै रै हाथ में छ मीनां री कैद करणै रो पावर है।'

किसनो फेर तहसीलदार कानी चाल्यो, नैड़े कोनी गयो, वीं चपड़ासी रै लेरै टुकर-टुकर हो लियो। चपड़ासी होळै-सी भिड़क्यो "परनै रै, अफसर नाराज हुवै।

किसनो फेर नैड़ै-नैड़ै हुयो।

चपड़ासी फेर होळै-सी भिड़क्यो। तहसीलदार नै सुणगी।

तहसीलदार रै के मन में आयी कै वण पाछै देख लियो, अर् किसनै सलाम बोल दी।'

मंगळ री आंख्यां किसनै री आंख्यां सूं मिली, किसनो मुळक्यो।

किसनै रै वूडै चेहरै पर जवानी आगी, वो रूप निखरंग्यो जको बारा साल पैली हो।

"अरे किसना", मगळ पूछ्यो।

"हां सा", किसनै बतायो, वीं रो रूं रूं खिलग्यो।

"अठै कियां ?"

"गांव सूं आयो सा।"

मंगळ ठहरग्यो, किसनै कानी देखतो हो रैयो, किसनो हाथ जोड़्यां खड़्यो रैयो।

"आज्या घरे चाल, किसना।"

किसनै भाज नै सांड छोलो, किसनै री धरती, प्राकास सगळो ओक सागै रंग बदळगी। थोड़ी देर पैंली जकी पवन ताती चालै ही, बा पेक छिण में सीतळ बयार बणगी।

दोजख

••

मास्टर मंगतूराम पैलो आपरी जिंदगी खूंसड़ै सूं नापी, सामै बींरी जूती ऊंधी पड़ी ही। नीली जद सारै कर नीकळी तो अेक जूती उलटी होगी ही। जूती रै तळै में अंगूठै री जगां निकळगी ही। कई देर तांई बींनै देखतो रैयो, जूती बदळीजै तो कोनी, ईरै तळै री मरम्मत करा लेवां। मंगतूराम अवार ही नवळ सेठ री छोरी नै पढ़ाणनै आयो हो। नवळ सेठ बींनै मीनै रा पच्चीस रिपिया देवै है। रोज अेक घंटै री पढाई। अेक दिन नागो कर देवै तो छोरी री मा टोक देवै, घणों दोरो लागै मंगतूराम नै। पण करै कांई! आयणगै सरदार मक्खनसिंह रै घरे जावै, बींरै छोरै नै पढ़ावै, पच्चीस रिपिया बो देवै। छोरा, छोरयां नै पढातां-पढातां ही मंगतूराम रै पांच टाबर होग्या। लांबी कतार बणगी। आ टाबरां में तीन छोरयां, दो छोरा।

मास्टरजी र घररै आगै आकड़ै रा रूंख हा, थोड़ा पण घणां। घांर आसै-पासै लोग पेशाब करया करता, बांस आवै, पण कीनै-कीनै

वरजे। फेर पड़घोड़ा भाटां कानी देख्यो। नगरपालिका खासा दिन पैलो अे भाटा नखाया हा, अठे सड़क बणैली। पण सड़क मोजूं तांई नी बणी। नगरपालिका में बांरो पढ़ायोड़ो छोरो सदस्य हो, बणनै कई वार कैयो, 'अरै भाया म्हारली सड़क में कांई देर है ?'

'बणैली गुरुजी, सदस्य कैयो।'

'अरै कद बणैली ?' मास्टर पूछ्यो।

पण वो पूरी वात ही नी सुणै, कालरा छोरा, आज नेता बणग्या। नेता बणग्या, खुशी री बात है, पण बेटा पूरी-सूरी व त ही कोनी करै। मास्टरजी रै मनमें कीं कड़वाहट-सी हो ज्यावै।

अेक दिन, मंगतूराम नेता बण्यो हो। राजावां रै राज में बण जोशीलो भाषण दियो हो, साथो तो पकड़ीजग्या, बीनै छोड़ दियो, पढ़ण आळो छोरो है, जिन्दगी बिगड़ जासी। पण, आ जिंदगी आछी बणी। जका नै पकड़्या, बांमें अेक तो मंत्री बण्यो, कांई कसर ही बीं कनै। मोकळी जमीन करली, अेक फेक्ट्री चालै है, बडणनै अेक कार है, अेक साला सूं अेम. अेल. अे है। पढ़्या लिख्या कांई है, दसवीं पास कै फेल। जिंदगी तो म्हारली बिगाड़दी पुलिस आळां।

फेर मास्टर घड़ी देखी, 'ओ हो, टैम होग्यो, दस बजण आळा है, मोड़ी हो ज्यासी। हैडमास्टर भी पूरो हरामी है, बेटो, खड़्यो ही मिलै है जमदूत-सो। अेक किलास दे राखी है हाजरी खातर आठवीं-की। पूरा पचास टींगर है, मोड़ा बेगा भी आवै है गुरुजी, हाजरी भिर ज्यावैली, ख्याल राख्या करो।'

मास्टर हेलो मार्‌यो, 'गरिमा री मा, रोटी त्यार है ? 'साग सीजै है, साग मोड़ो आयो है।'

'तू मोड़ो करावैली, बेगी कर।'

मास्टरजी दिनुगै उठनै न्हाय लेवै हैं, फेर ट्यूशन पर जावै है।

गरिमा री मा नेड़ै आयनै बोली 'थे चल्या जावो जद अै टींगर नाराण लागै है, आणै रै बाद टिकै है, न्योरा काडती रवूं, कोई सब्जी कोनी ल्यायनै देवै। न पढै न लिखै। गरिमा नै थोड़ी भेजूं बजार!'

'नत्थू, ओ नत्थू', मंगतूराम हेलो मारयो।

नत्थू नेड़ै आयो। मंगतूराम नै रीस उठी, सोची, जचार ईंरै थप्पड़ मारदेवै। पण मंगतूराम थप्पड़ मारतां-मारतां 'बोर' होग्यो। आज बीस साला सूं टींगरां रै ही थप्पड मारया, हमैं, मारतो ही रैसी कांई।

'आथण नै देखसूं', मास्टरजी कैयो, 'सूं अेकर रोटी रै लाग, काची पाकी बणायनै घालद्य, मोड़ो होसी तो कीमूरख सू माथो लागसी।'

गरिमा री मा रसोई में चली गई।

नत्थू फालतू टींगर-सो मास्टरजी रै सामै खड़्यो हो। 'चाल, कपड़ा पैर, त्यार हो, स्कूल लागसी', मंगतूराम बेटै नै कैयो।

मंगतूराम जद स्कूल कानीं चाल्यो तो मोड़ो होवणै रो बहम होग्यो। चटकै चटकै गासिया लिया, आधा उगाळै, कई, बिना उगाळै पेट में। बेगासा कपड़ा पैरनै भीर होग्यो। रस्तै में सेठ री हेली रै सारेकर टिप्यो। ईं री छोरी नै मास्टरजी पढाई ही, बा अबार करोड़पति रै घर में है। मास्टरजी रो डीलडोल बां दिनां फकाफक हो। छोरी रै गोरै मूंढै री आब मास्टरजी नै याद आयगी। मास्टरजी आपरै मूंढै पर हाथ फेरयो, गालां पर उग्योड़ा केस भांकड़ी री तरियां चुभग्या। मास्टरजी ओजूं तावळा-तावळा चाल्या, वीं री भीक सागै ही अेक लांबो सांस निकळ्यो।

मास्टर मंगतूराम जद शाळा रै नेड़ै-सी आयो तो दूजी घंटी लागगी-प्रार्थना री घंटी।

जन गण मन अधिनायक जय है..... ..

मास्टर मंगतूराम सावधान होयनै ध्यान में हो, ध्यान भी ही हो कै मोडूं रो घोळमो देशी हैडमास्टर। श्रोजू बीरो पसीनो कोनी सूक्यो हो। जय हे जय हे रै सागै अेक बूंद कान रै पनै सूं गालण लागरी ही। हाथ उठयां बिनां बा बूंद रुकै कोनी।

मंगतूराम दिन छिप्यै आपरै कमरे में बैठयो हो। कमरै में मास्टरजी बैठ्या रोटी नै उडीकै हा। अेक ही कमरो हो मास्टरजी कनै। ईं कमरे में रसोई, पेडो सोवयूं हो। बारै चोक में दो खाट घलजा ही। 'चालो बारे बैठ ज्यावां, अठै तो टींगरां री च्यां-च्यां भोत है', आ बात मास्टरजी मन में सोचनै बारै आग्या। टाबर के थोड़ा हा! पूरा पांच। नीचला तो जावक पूपरिया-सा हा।

बारै बैठणै सूं की चैन मिल्यो।

गोमती रोटी लेयनै मास्टरजी रै आगै मेली तो मास्टरजी गोमती नै देखी। मास्टरजी देख्यो कै गोमती लागण चौं सेठ री छोरी-सी लागै ही। मास्टरजी रो माथो अेकदम नीचै झुकग्यो। गरदन में अेक मोड़ आग्यो, थूक गिटनै रोटी रो गासियो तोड़्यो।

'गोमती री मा!', मास्टरजी कैयो। पतो नी क्यूं, फेर रोटी रो टुकड़ो मूंह में ले लियो, फेर पत्तो लाग्यो, ईं'न चटणी सूं तो चबोयो ही कोनी हो, चटणी बणाई ही मास्टरजी साग सदा थोड़ो ही पोसावै।

गोमती री मा नै चांय, चांय में कीं कोनी सुणीज्यो। टींगर फूरोया-सा वार कर फिररचा हा।

मास्टरजी सूकै गासियै नै दोरो-सोरो निगळ लियो।

सूत्यै-सूत्यै मंगतूराम कई वातां रो सूंवाज करयो। पीसै रो हिसाव मास्टरजी रोज करचा करतो। वो सुवाळ निकाळै जद घणकरां सुवालां में 'जीरो' आवै। घर आळै सुवाल मे सदा ही 'जीरो' आवै। बंडै के सुबाल पर 'जीरो' आवै तो बींरो जी सोरो हुवै, पण घर आळै सुवाल मैं 'जीरो' आणै सूं बीरो भोत जी दोरो हुवै। जद वो आपरै मायला नै याद करै, घासियो हुमै घासीरामजी सेठ है, मूळियो है मूळारामजी थाणेदार, अर पालियो है तो पालीराम हो पण पटवारी होवणै सू मजा करै। पत्तो नीं, वो क्यूं मास्टर वण्यो। अबार बीनै याद आयो के जद पढ़ाई रो चसको लाग्यो हो बीनै, चोखा लम्बर हा ग्यारवीं में। सोच्यो, बी० अे० अेम० अे० करल्यूं। बी० अे, अेम० अे० तो करली, पण अबार काळजो तळीजै है। सरकार अेम०अे० जोगा पीसा दे देंवती, तोई कीं जीव टिकतो। वण राज नै पांच-सात गाळ मन ही मन काढ दी।

ऊपर आंख्यां फाड़ी तो छोटो-सो आभो बीनै दीख्यो। तारा टिमटिमावै हा। चांद रो रूप झळकै हो। आज री रात बीनै फूटरी लागै ही। आज दीतवार होणै सूं कठै ही पढ़ावण नैं जाणो कोनी हो।

'गोमती री मा', वण कयो।

पण गोमती री मा तो अजूं काम सूं नीवड़ी कोनी ही।

टाबरिया सोग्या हा। गोमती अोजूं वांई मा र सागै काम में सारो लगावै ही। नवीं में फेल होवणै सू पढ़ाई छाड़ दी ही सोचै हो प्राइवेट फार्म भरद्यूं। पण घणी पढ़ाई, मोटो घर, घणो भण्योड़ो टाबर चाईजै। मोटो घर, वोळा पीसा चाईजै। पीसा रो तो रोणो ही है मास्टरजी कनै। मास्टरजी अेक काम जरूर करै है हर मीनै अेक लोटरी रो टिगट खरीदे, वड़ी जिज्ञासा सू .लोटरी

री लम्बर अखबार में देखै, पण बोळी कसर रज्या है। अकर तो पांच लम्बर री कसर रंयी ही। फेर बो समझै, तूं कितो कमजोर होग्यो है, फालतू आदमी, जके री जगां पांच छः जीवां में जाणीजै है। अेक दिन बो हो हजार मिनखां में खड़चो लोगां री तरसती आंख्यां रै सामै फूलां रो माळा घलवाई ही।'

मंगतूराम अेक कच्छै में सूत्यो हो। शरीर माथै हाथ फेरचो, पेट डूंगो चल्यो गयो हो, आंतड़ा रा हाड रड़क हा।

गोमती सोगी ही, पर सोतां ही नींद आगी ही।

मंगतूराम चांदणी रै दरपण में गोमती रो मूंडो देख्यो। मूंढो सांपड़दं सूक्योड़ो फोफळियो-सो लाग्यो। मंगतूराम रै मूंढो खारै पाणी सूं भरग्यो जाणै, इसो लाग्यो। बो तो रोज पढ़ावै जद ताजा चैरा सामनें हुवै। काल जकी ट्यूशन सुरु करी, बा माला नाम री छोरी बीरैं माथै में चकर काटणनै लाग गी। मंगतूराम रो सरीर कूटयोड़ो सो होरयो हो। थकेलै मे हालण नें जी कोनी करचो। गोमती री मा नें नींद आगी ही।

दूजे दिन स्कूल मे जावतां ही पतो लाग्यो कै राज री अक मन्त्री रात नै ही मरग्यो हो, पण ओजूं तांई हैडमास्टर छुट्टी कोनी करी। सगळा मास्टर मंगतूराम नें कंयो 'थे जाय'र कैवो, रेडियै सूं समचार आग्यो, साळा, आज तो छोड़।'

मंगतूराम थूक गिटतै ढकेड़ै मूंढै सूं हैडमास्टर नै बात कंयी।

हैडमास्टर बात नै सोराई सूं टाळ दी, 'हाल तांई हुकम कोनी आयो।'

'हुकम तो दो दिनां पाछै आसी, रेडियै सूं हुकम आग्यो है।'

पण, राम जाणै! कियां होई कै छुट्टी री घंटी लागगी, अर छोरा हुरड़ाट करनै बारै निकळग्या। मंगतूराम अर हैडमास्टर बारै आयनै छोरां नै रोकणै री चेष्टा करी, पण चेष्टा खाली

रंगी । हैडमास्टर रै पसीनो । आग्यो मंगतूराम वणावटी मूंढै सूं दुख प्रकट करयो । मन्त्री सूं पैली दोनूं मिलनै 'डिस्पलीन' रै मरणै रो शोक-संदेश भरयो ।

घरे आयनै दोनूं टांग पसारनै मंगतूराम पूरी मांची रोकली । गोमती री मा पूछयो, 'आज वेगा कियां ?'

'अेक मंत्री मरग्यो ।', मास्टरजी कैयो ।

'रांद कटी', लगतां ही गोमती री मा कैयो, जाणै बी‌रो घणों जी सोरो होयो । छोरा नाचता-कूदता घरे आया ।

मंगतूराम नै सोचण नै टैम कम मिलतो । आज वो वेलो ही हो । सोचण लाग्यो अेकलो खाट पर पड़यो-पड़यो । पतो नी मन्त्री रै मौत सूं बण आपरै रिटारमेंट नैं कियां जोड़ ली । सात साल पाछै बो रिटायर हो जासी । मोटोड़ो टाबर बी अे. कर लेसी, छोटियो बारवी अर बीसूं छोटियो दसवीं । दो छोरियां नै ब्यावणी । गोमती र साख री चेष्टा करी, पण पार नी पड़ी । अेक जगां तो हजार रिपिया टीकै रा मागं, छोरो तो चोखो है, पण........! मंगतूराम कीं भेळो सो होवण लागग्यो । गोमती रो रूप कीं डरावणो-सो लागण लाग्यो । पीसां रो मोल कांई है, आ कागजा री पोथ्यां मैं कठै ही लिख्योड़ी कोनी ही । पण ज्यूं-ज्यूं ईं दुनियां री न्यारी पोथी रा अंक पढया त्यूं-त्यूं अेक अेक अंक मैं रिपियै रा गीत लिख्योड़ा मिल्या । मंगतूराम रै काळजै रो रगत तेजी मैं आग्यो ।

गोमती री मा रोज कान खावै कै थे कठेई जाग्रो तो काम वणै । जाऊं तो पीसा खरच हुवै , छुट्टी कोनी मिलै, इन्नै टयूशन छूटणै रो खतरो हुवै, करै तो कियां । छुट्टयां मैं ही ठीक रैसी । मगतूराम सोच मैं डूंगो डूबग्यो, पण कठेई कोई चीज हाथ नी लागी, कोई भाटो तक कोनी मिल्यो । मंगतूराम रो काळजो जोर

सूं धड़क-धड़क करण लागग्यो। स्यात् म्हारो दिल डूब तो नीं जावैलो'। मंगतूराम फिकर और तरियां करण लागग्यो। म्हारो दिल.... ......! बण फट पाणी मांग्यो 'गोमती री मा चटकै पाणी. .!'

गोमती री मां पाणी ल्याई फेर कीं जी टिक्यो। बण सोच्यो, 'अबार फिकर नै काया झाल नी सकैलो।'

हौळै सी मूंढो फेरनै मंगतूराम खाट पर उलटो होग्यो। मूंज री जेवड़्यां छोटी होरी ही, नीचै री धरती री धूड़ दीखै ही। सोच्यो जे रोल्यूं तो की जी टिकज्या। पण रोवणों ही भूलग्यो। आंसू तो रोवणै सूं आवै। शरीर उठावै तो उठै कोनी जाणै दोजख रो भार आखै शरीर पर आ पड़यो हुवै।

••

परलै

••

बाबो आजकाल अैरी-बैरी बात करै, 'परळै होसी, परळै'। हूं छुट्टी गयो जद जातां ही बांसूं मिल्यो, पगां रै हाथ लगायो अर सारै ही पगाथै बैठग्यो।

'कांई हाल चाल है, बाबाजी! जी सोरो तो है! शरीर ठीक चालै है।'

'हमै, कांई है शरीर में, बेटा! पण थां जुवाना नांव सूं ठीक हूं। झांझरकै खेत जाऊं हूं, भारियो ले आऊं, गायां खातर कूत्तर काट द्यूं, थां जुवाना में कांई है। पण परळै होसी परळै।'

'बाबाजी, परळै री कांई बात पकड़ली, परळै कियां होसी। दुनियां मौज करै है। आछा टैरालीन रा कपड़ा पैरै है, रेडियो बजावै है, थांनै परळै री कांई सूझी।'

'हूं, कूड़ी केऊं कांई? साची कैऊं हूं। कै तो जरमन-जापान रो जुध होसी, मोटा-मोटा बम फाटसी, कै आखो धरती मैं

काळ पड़सी, धरती फाट जासी, पाणी-पाणी हो जासी, धरती लुक जासी।'

बावेंजी री बात में फेर हंसी आई। हूं कैयो, "बाबाजी, जरमन, जापान तो जुध-करणे जोगा ही कोनी। अबार तो रूस अर अमरीका तकड़ा है। स्यात थे पुराणी बात करो हो।"

"तो तूं थांने मानलै, म्हानै तो नांव कोनी आवै, पण होसी परळै।"

इत्ते में बावेंजी रो जुवान बेटो जुगल आग्यो। आवंता ही बावेंजी बीं कानी देख्यो अर बोल्या, "ऐ है म्हारै तो जुवान कंवर साहब, आया है मांयसूं निकळ'र, रात नै करै सेर सपाटा, फेर मोट्यार नै आवै नींद, तावड़ो चढयां उठै जद आंरी पगथळी आकरी होवणने लागज्या।"

हूं जुगल कानी देखनै बोल्यो, 'क्यूं भाई, कांई कैवै है बूढिया?'

"ईं यां ही बैलै है।"

"बात-सावळ, हो कैवंता होगा।"

'कैवे है सावळ, आंरी तो साठी बुधि नाठी होगी। नींद तो आवै कोनी, पड़्या बरड़ाव बोकरै।'

हूं जुगल ने समझायो, 'जुगल, आंरा दिन कमाई करणे रा कोनी। आं तो घणां ही दिन कमायो। अबै तो आनें सारो देवो।'

"हूं आंरै बाप रै ही सारै कोनीं, बावेजी झटको देयनै बोल्या, "आ जुवानां नै हूं के धारू हूं, इसा पचासां रै हमें ही सारै कानी। पींचनै पाणी काढ द्यूं।"

बी वकत बावेंजी री धोळी मूंछयां फड़का खावै ही। होठ पून में पत्तो हालै ज्यूं हालै हा। आंख्यां लाल मिरच-सी सुरख

होगी ही । हूं बावंजी कानीं देखतो ही रयो । जुगल मस्ती सूं ईन्नै वोन्नै फिरै हो, स्यात् कीं चीज ढूंढ़ै हो ।

इत्तै में वींरी मा आयी । पूछ्यो, 'मिल्योक नीं ।'

"कांई ढूंढै हो ?" बावंजी पूछ्यो ।

"कप होनो चाय आळो ।"

"ओ पड़्यो भई", बावंजी बतायो ।

मां'र, वेटो मांय चल्या ग्या जद बाबोजी होळै-सी बोल्या, "तूं देखै है, अबार ओ चाय वणावैला, फेर पीवैला, आंरो राम नीसरग्यो है. बाळ तो दियो सारो टापरो । वास्ते लगादी ईंरै । हूं साची कैऊं काना ! म्हारै कर्यै-करायै पर आं पाणी फेर दियो । जो करै ईं ढूंढै रै वास्ते लगाद्यूं ।"

हूं बावंजी रै सागै मिल'र अफसोस कर्यो । बाबोजी फेर बोल्या,—'बडोड़ो है आंरो ही सिरखाणो, बडोड़ै रा लखण जाणै है कै तूं, हरामजादो जूवा खेलै । अेक ट्रेक्टर पर रैह्यो है, सेठ दो सौ रिपिया देवै है, पण कंजर, सगळा रै धूंवो लगा देवै है । ओ टापरो कियां चालसी ! परळै होसी, वेटा, परळै ।'

बाबोजी परळै री बात कोनी छोडै हां, हूं कैयो, "बाबाजी परळै री बात कियां पकड़ राखी है · न तो कोई जोतखी कैवै, पतड़ो बोलै, न कठैई बात चालै ।"

"तूं समझै कांई, काना । दुनियां मरैली भूख । दाणै-दाणै नै तरसैला । हूँ साची कैऊं । मिलैगो नी सेर उधारो ।"....

बाबंजी रै पतो नी कांई होग्यो । म्हानै बावंजी पर तरस आयो, बाबाजी म्हारै घरां में चोखा स्याणां मिनख है अबार ईंरै कियां करण नै लागग्या ।

दिन छिपतां ही बावंजी तो भजनां री राग टेरी, 'तूं तो र

भजन करलै... ......कांयां मांया काळं छाया..........' बावैजी ने सदा सूं ही भजनां रो शोक हो। भांभरकै उठनैं भजन गावैं, रात नैं सोपै तांई भजन गावैं, कदे दिन में, जे जी में आवैं तो गावणां शुरु कर देवैं। बावैजी री राग जाणैं, साच्यांई, रेडिय में रिकार्ड बोलै है। म्हारी मा कैवै है कै बावैजी री जुवानी, बुढ़ापै में कोई फरक कोनी। वांरो राग ईं बुढ़ापै में बीसी है जिसी जुवानी में ही।

बाबोजी बीयां तो दुनियां नैं जाणै है। आसाम, बंगाल, पंजाब सगळै घूम्योड़ा है। वै कदेई आसाम री वात बतावैं तो सारैं जन-जीवन नैं अेडी सूं लेयनैं चोटी तांई बात बता देवैं। अेकर गांव में काळ पड़्यो तो वै टाबरां नैं लेयनैं पंजाब गया। पंजाब में छोटै सूं लेयनैं मोटो काम कर्‌यो। मजूरी करी अर दुकनदारी करी। दुकनदारी इसी करी कै कीं गुड़-मीठाण ले आया, की कांदा, गूंदळी। होयो ईंयां कै बीक्या तो बीक्या, नीं तो घर आळा टींगर ही खाग्या। जिंदगानी में घाटै-बाधै रो फिकर स्यात् ही कर्‌या करता बाबोजी।

बाबोजी आपरै टाबरां नैं दोरा कोनी करता। वेगा उठता, बांनैं सोवण देता। घर रो धधो निवेड़, खेत जांवता, अर खेत रो काम करनैं घरे आ ज्यांवता। टाबर काम करता तो करता, न करता तो न करता, पण कदेई बांसूं काम खातर माथो कोनी लगावंता। ईं अस्सी साल री ऊमर में वांरो ओ ही हाल है। अेकर की काम काज रै चक्कर में ट्रेक्टर में चढ़नै गया हा, रस्तै में ट्रेक्टर उळटग्यो, अर बाबोजी सगळांरै सागैं नीचैं आ पड़्या। ट्रेक्टर सूं अेक बोरी बाबैजी रै पगां माथै आ पड़ी, अर बाबैजी रो पग टूटग्यो। पण बाबोजी इसो करड़ै हाडां रो मिनख है कै

बठै सूं चालनै घरे आग्या । फेर वीं पग रो ओपरेशन होयो । पगं फेर भी टूटो रेग्यो, पण डंण में इसी करामात कै ई खोड़िये पग सूं ही वीयां ही मशीन री तरियां काम करें।

हूं अेक दिन जुगल नै अेकलै में समझायो, पण जुगल ओजूं वीयां ही बोल्यो, "बादी में बरड़ावै है।"

मांधी चालै ही खे खे, बादळ री कठै ही तीभणी कोनी ही। च्यारूं कूंटां फीकी-फीकी लागै ही, आखो आभो धापनै उदास हो।

बाबोजी आपरी खाटली पर पड़्या हा। खुश हा। हूँ बोल्यो, "बाबोजी, अबकै तो आसार माड़ा लागै है।" "हूं, कंयो है नी कै भाई, परळै होवेला परळै।" "काळ में अर परळै में कांई फरक है," हूं कंयो। "हां-हां, छांट नी पड़ै अेक, दाणों नी हुवै सेर, मरैला भूख, ओ राम अबकै इसी करैलो कै याद राखैला। घेंटूवो पकड़लेगो, अर आपां कराला—घुटु, घुटुर।"

हूं उदास हो, पण बाबोजां राम जाणं घणां खुश हा।

हूं बात नै डूंगी कोनी सोची।

पाच सात दिनां पाछै आभै रो रंग बदळग्यो, आभै में काळा बादळ ऊग्या, छिणमिण कर छाटा ओसरी। बादळ घुटणनै लागग्या छांटां अेकळ धारा होगी। धरती पर पाणी उछणनै लागग्यो। धूंधाधार-सी मचगी। इकलग दो घंटा इसो बरस्यो कै च्यारूंकानी पाणी-पाणी होग्यो। धरती री महक बदळगी। मिनखां रै मूंडां पर आब आगी। बूढ़ा, जुवान, टाबर सगळा उछणनै लागग्या, जाणं, जुवानी सगळा में आयनै बड़गी हुवै। मीडकां री बोली सुरंगी लागै। आदमी, लुगाई चैळकै होग्या। कित्ती ताकत है ई धरती में ई बिरखा, ई सुरंगी बिरखा में।

वीं वकत हूं बाबेजी कनै गयो। "बाबोजी, बाबोजी, आज

तो मजो होग्यो, काळ रो सिर फूटग्यो।" पण बाबोजी फीका-फीका भाखळै में भेळा हुया बुगचियो सा वणर्या हा। कीं बोल्या कोनी जद हूं भोजूं पूछयो—"बाबोजी, जी सोरो है?"

"हां, पड़या हां रे भाई!"

"देख्यो, आज तो राम रंग लगा दियो।"

"हां, लगा तो दियो।"

बाबोजी, पण इस्यो लाग्यो जाणं कीं घुटेड़ा हुवै।

इत्तं में म्हारी बडी मा बठै ई आगी।

हूं फेर कैयो—"क्यूं बडी मा, आज तो राम राजी है।"

"हां, भई, राजी ही है।"

इसो लाग्यो जाणं बावैजी रं घर में कोई कुराणी मौत हुई हुवै।

दोनूं डोकरा, डोकरी ईं मस्त माहोल नै सह नहीं सक्या कोई ढूंगी पीड़ ही, जकी वानैं सतावै ही।

इत्तं में जुगल आग्यो, वोही घुट्योड़ो-सो हो। तीनूं बैठनं वाणैं, मातम-सो मनावणनैं लागरैया हुवै।

मेरै तो कांटा-सा गडणनैं लागग्या।

हूं बिना बोले बठै सूं चाल पड़यो।

घरे आयो तो मा बड़ा-गुलगुला बणा राख्या हा। काकोसा भीज्योड़ी धोती में ही कोठा सुंवारता फिरैहा, कठैई ढूंढ़ा पड़ न जावै, भर उघाड़ै डील में बांरो नाचती काया सांपड़दे दीख ही। मा रो अंग अंग खिलर्यो हो।

इत्तं में म्हारो छोटो भाई खेत सूं मेह देखनै आग्यो। आतो ही बोल्यो—'खेतां में चाळीस-चाळीस आंगळ मेह है।"

काकोसा बोल्या—"काळ रो दिन आछो है, हळांतियो

करल्यो ।

हूँ, पूछ्यो, "मा, अेक बात पूछूं !"

"पूछ, मा कैयो ।"

"आज बावोजो अर बड़ी मा उदास भोत है ।"

मा हांसी, बोली—"तनै बेरो कोनी ?"

"ना,"

मा फेर हांसी, "तेरै बावजी सारी जमीन अडाणै मेल दी, आं छोरां रा ब्याव कर्‌या है बीनणी ल्याया है। बाबैजी पर करजो है—दस हजार।"

हूँ समझ्यो।

'आज बिरखा बरसी है, बाबोजी दुखी होग्या। दुनियां खेती बावैली, अे देखैला-टुकर-टुकर।'

"आं छोरां में दम कोनी।"

'ब्याव कर्‌योड़ो है, मौज करै है, काम न धन्धो,' मा टेढ़ी बात कैयो।

अबै म्हारै बावोजी री 'परळै आळी बात समझ में आगी।

आभो दूधं बरणं होर्‌यो हो। मोठी-मोठी, हळकी-हळकी अेक-अेक छांट पड़ै ही। सगळा आपरै धंधै में लागग्या हा। हूँ कोठै पर रोही-री रुणक देखण चढ़्यो। गोर बरण रा धोरा सोनै रा देह-सा लागै हा।

पांच

गोविन्दो जद कसियो लेयनै खेत कानीं चालण लाग्यो तो बींरी बहू सजनी जोर सूं हेलो मार्‌यो, "सुणोक फूलियै रा बापू।"

गोविन्दै हेलो सुण्यो, जद् बीं रुक्यो, कसियो मोढै सूं उतार्‌यो, पाछो मुड्‌यो। देख्यो, सजनी बीं कानीं देखनै मुळकै ही।

"कांई केवे ही," पूछ्यो गोविन्दै।

सजनी बोली कोनी, हँसणनै लागगी।

"बोल, बोल, बेगी बोल, म्हारै मोड़ो होर्‌यो है।"

"सुणो तो, कीं सुस्तावो तो बात करूं।"

आपरो बात कैणी हुवै तो मिनख कीं नरम हुवै, चाहे बो कित्तो ही नेड़ो होवो।

"बावळी है, बाजरी रो निनाण करणो है, म्हानै मोड़ो होर्‌यो है।"

"सजनी चालनै गोविन्दै रै नैड़े आई। फेर मुळकनै बोली, 'थांनै म्हारो ओढ़णो कोनी दीसै ?' लीर-लीर होर्‌यो है। कद ल्यायनै दियो हो। याद तो करो। फूलियो होयो जद ल्याया हा। अेक ही गाभो, चालै कद तांई। थे ही सोचो।"

गोविन्दे फेर कैयो, "बावळी, खेत सूं वेगो आ जासूं, फेर ल्या देसूं।"

"आ तो थे सदा ही कैवो हो, आया हा, कदेई वेगा। देखो तो सही, लीरा-लीरा होर्‌या है", सजनी गोविन्दे रै अेन सारै ओढ़णै नै करने दिखायो।

"मन्नै के दीखे कोनी," दोविन्दै कैयो, "कई जगां तैं टांका वै राख्या है, रंग अेन फीको-फलर होर्‌यो है, पण बेल तो कोनी।"

"बेल फेर मिलसी कद", सजनी जोर देयनै कैयो।

गोविन्दो सजनी री बात मोड़ नीं सक्यो। सजनी साची कैवै है, बेल तो मिलै ही कोनी। रात दिन गिरस्थी री चक्की में चालण लागरैयो है। बींयां तो ओजूं है के, टावर तो अेक ही है। ओजूं तो तिलक काढ्यो है, सूक्यां ठाव पड़सी।

गोविन्दे कसियो परै मेल्यो, अेकर घर में चक्कर मार्‌यो, फूलियै रा लाड कर्‌या, अेकर पाणी पीयो, फेर बाणियै री हाट कानीं चाल पड़्यो।

मारग में बण आप कानी देख्यो। धोतियो फाट्यो पड़्यो है। कुड़तियै में जगां-जगां झरोका होरैया है, सपड़-सपड़ करै है। पण घालो कोई नी; रोही में कुण देखै है। सागै बींनै याद आवै ही— धन्नै री बही, राम जाणे, कित्तो जोड़ होग्यो है बींरै में, बो तो भणपढ़ है, जित्तो बतावै बित्तो ही सही है।

सेठ मांयली गद्दी पर चौड़ो होय'र बैठ्यो हो। दोनां कानी

बेटा-पोता खेलै-कूदै। बेटा-पोतां री ऊमर ज्यूं त्यूं अकसी ही। सेठ चाय घालनै अेक गोळी मूंढै में मेली तो गोविन्दो सामैं खड़्यो दीख्यो। सेठ मुळक्यो, पण बोल नहीं सक्यो। फेर चाय री घूंट लेयनै गोळी आगीनै गिटी। फेर सेठ बात करणै जोगो होयो। सेठ चाय री घूंट ओजूं ली, जद बींरो जी सोरो होयो। गोविन्दो कनै जायनै बैठग्यो हो। सेठ दोनूं आंख्यां सूं पूरै गोविन्दै नै देख्यो, फेर बोल्यो, "बोळे दिनां सूं आयो, गोविन्दा! जमा ही बारोठियो बणग्यो! दरशण ही दुरलभ होग्या! इसो के मायाजाळ में फंसग्यो।"

"सेठां, कांई करां, थे के जाणो कोनी, बेल तो मिलै ही कोनी। आज काम छोड़नै आयो हूं।"

सेठ चाय री बीजी घूंट ली। सेठ रा पोता-बेटा बींयां ही भळवाद में रुपरैया हा। टाबरी करै ही 'पंजी' सागै कदै 'दस्सी' सेठ बानै देणी कोनी चावै। सेठ जद आखतो होग्यो, जद बण 'पंजी' 'दस्सो' गल्ले मांय सूं काढनै देदी अर आपरो पिंड छुडायो। सेठ नैं जाणै सांस-सो आग्यो। टींगर पीसा लेयनै बारै भाजग्या। फेर सेठ टिक'र गोविन्दै सूं वात करणनै लागग्यो, "हां जो, गोविन्दा, तूं किताई दिनां सूं कपड़ो लियो कोनी देख तेरा सगळा कपड़ा फाटरैया है, पोतियो लीरां-लीरां होरैयो है, कुड़तियै तो तेरी डोळ ही विगाड़ राख्यो है। कपड़ा आया है अवार ही दिल्ली सूं, घणां सस्ता अर फूटरा।

गोविन्दै कपड़ा कानीं निजर मारी। बींनै तो बै आछे सूं आछा लागै अेक-अेक सूं वधनै। पण बो बोलै नो। सेठ अब वेगा-वेगा चाय रा घूंट लिया अर अेन बेलो होयनै गोविन्दै कानी सरक्यो।

'क्यूं कुड़तियै रो कपड़ो चाईजे', सेठ गोविन्दै रै कुड़तियै रै हाथ लगानै कैयो।

'चोधरी' सेठ गोविन्दे नै कैयो, 'थारी बहू सातर अेक पोळो चाहै।'

"अरै, वीनै तो भूल ही ग्यो, देखो, म्हारी भी अक्कल अब ऊमर सायनै थोथी होगी।"

सेठ रो मूंढो दाड़म-सो खिलग्यो। किरचा सूं खज्योड़ा दांत बारै निकळग्या। बारै मूंढो काढनै हेलो मार्‌यो, "च्यानण, ओ च्यानण, कांई करै है, आ तो, गोविन्दो आयो है रे!"

च्यानण हेली सूं नीचै ऊतरनै दुकान में आयो—"कांई है, बापूजी।"

सेठ कयो, "गोविन्दो अडीकै है, चटको कर। ईंरो काम खोटी हुवै। खेतीखड़ आदमी, पोळा दिखा ईंन्नै, अबार जका आपां दिल्ली सूं ल्याया।"

सेठ मूंढै में किरचो लेयां चवाणनै लागग्यो। वण अेक किरचो गोविन्दे कानी कर्‌यो। गोविन्दो हंस्यो, "कांई फायदो है ईं लक्कड़ सूं।"

"भूख चोखी लागज्या रै।"

"भूख स्यूं तो मर्‌या ही फिरां, सेठां, आ तो घणीं लागै है, कम लागै ईसो किरचो द्यो।"

सेठ हंसणनै लागग्यो।

च्यानण बीड़ी रै बंडल सूं अक बीड़ी काढनै गोविन्दै आगै मेल दी। गोविन्दै बीड़ी सिलगायी।

च्यानण इत्तै में ओढ़णां री अेक गांठ गोविन्दे रै आगै मेल दी। खोलनै दिखावणनै लागग्यो। मोल-तोल सागै ही बतावणनै लागग्यो। गोविन्दे रै अेक पोळो पसन्द आग्यो, "ओ कित्तै रो, च्यानण।"

ध्यानण मोल वतायो। गोविन्द रै जच ना जचै, पण गोविन्द नै उधार लेणों हो, पीसा नगद तो हा कोनी। गोविन्दै वताये मोल में पीळो आप कानी मेल लियो।

सेठ इकलंग गोविन्दै कानीं देखै हो। गोविन्दो उठनै ज्यावै, बींसूं पैली सेठ मोल्यो, "गोविन्दै नै कुड़तियै रो कपड़ो दिखा, रूपाड़ो फिरै, लागै ही कोजो। मिनखां में उठे बेठै, भूंडो कोनीं लागै।"

गोविन्दो बेठ्यो, "ल्यो देखल्यां आपणै कांई है।"

ध्यानण फट दो थान आगै मेल दिया।

"कांई साव है, सेठां।"

"तेरै कदेई ज्यादा लगाया ? थारो म्हारो कण बांट्यो, गूंगा, फाड़दे दो कुड़तियां रो। भाई, फिकर क्यूं करै है, पीसा अवार कोनी, मन्नै बेरो है, सावणी रा दाणां निकळतां तांई तनै बतळावां कोनी। म्हारो भी काळजो देख।"

ध्यानण गोविन्दै खातर दो कुड़तियां रो कपड़ो दे दियो।

"ल्यारे, साफ माळी मलमल, गोविन्दो किसो फेर-फेर आसी, ईं पोतियै में लागै बीडरूयो-सो। कदे, बटाऊ घटाऊ आज्या, कठैई आपरै सगां-संबध्यां में जाणों पड़ै।"

"ना-ना, सेठां, घणों होग्यो, हुणै नी।"

"अरै बावळा ! तूं तो बीसो ही रैयो, म्हानै ठाव है, अवार समो म्हांसूं छानो कोनी। तेरै पूरा सो मण मोठ होसी, बाजरो माड़ो कोनीं।"

गोविन्दै मोजूं आणाकाणो करी।

"देखै कांई है, ध्यानण", सेठ कयो, "तनै दुकानदारी आयै कोनी, इन्नै ल्या मलमल, गोविन्दै री तो आ बांण है।"

फेर तो च्यानण अर सेठ मिलनै गोविन्दै री बांध भर दी। धपाऊ रा कपड़ा दे दिया। वण लुगाई, टाबर सगळां रा मोकळा कपड़ा दे दीना। कपड़ां रै सागै ही गोविन्दे रै मन में, फिकर री गांठ बंधगी। गोविन्द नै आपरै घर री बींजी शकल धरती रै दरपण में दीखण लागरी ही जाणै, आखै घर में दीवाळी री सोचन्यण होरी ही।

खेत में गुंवार-जुंवार, मोठ, बाजरो सोवयूं हो। गोविन्दो अर सजनी रोज खेत में जावता, काम करता, आछी बीजाई, आछो नीनाण, कसर कीं नी राखी। बाकी तो राम रै सारै है। काम रो फळ तो बो ही देवै है। बींनै देणों भी चाईजै। काम करै जको भूख मरै, जे ओ ही राम करै तो राम नै सोभा कोनी देवै। काम रो जस नीं मिलै तो फेर राम कठै। लोग कूड़ा ही बीरो बखाण करै है। गोविन्दे नै भी काम रो जस कोनी मिल्यो। अेक दिन इसो आयो के सारै खेत मैं टिड्डी बैठगी अर खेत नै खागी। सिट्टां में दाणों कोनी, बाजरी रै पांनड़ा कोनी, मोठ, गुंवार सोही डांखळा-सा होग्या, टिड्डी खेत नं के खागी, गोविदं नै खागी, गोविन्दै रै घर नै चूसगी। गोविन्दो थाक'र डांखळो सो होग्यो। सजनी सूख खेलरो बणगी। घर मे घुण-सो लागग्यो। दोनू हाथ भड़का नै बैठग्या। टोटै मे राड़ बढै। कदे सजनी गोविन्दै सूं लड़ै, कदे गोविन्दो सजनी सूं। आसै-पासै कीं नी सुहावै। सजनी नै छोरो आक-सो खारो लाग्यो। जचै जद ही बींनै फेंकनै मारै, 'मरज्याणा तूं आयो जद काळ पड़्यो, भरी खेतो उजड़ी। राम थाळी मेलनै आगै सूं सरकाली।'

टीडी गोविन्दै रो खेत खायो, पण धन्नै रो खेत तो हुर्‌यो हो। बो तो दिन रात बढै हो। फेर भी ईं हालत में धन्नै नै कीं जोर तो आसी ही, आ सेठ जाणै है। बो तो बरसां सूं गांव आळा सागै कार विहार करै। काळ जमाना भी देख्या है। धन्नै सूं कांई

छानी। बो तो हर मोड़ में ग्रापरी गाडी चलांणी जाणै है। ग्रोजूं तांई ईं रा बळद फंस्या कठैई कोनी।

सेठ गोविन्दे नै बुलायो। दुकान में तीजै खण में लेजानैं कैयो, "चौधरी पीसा देणा है।"

"कित्ता होग्या, सेठ ?"

"पूरा ग्राठ सो सत्तरा, तीस पीसा।"

'इत्तो सामान कद लेग्यो।'

जद सेठ ग्रापरी लाल बही खोली, ग्रेक-ग्रेक ग्रांक पढ़नै बतायो, बीरैं ऊपर ब्याज जोड़नै पूरो हिसाब दुका दियो।

'तूं जाणै कोनी, गोविन्दा, सेठ री कलम कदेई कूड़ी कोनी बोलै। म्हानैं साहुकार कैवै है लोग, समझ्यो !"

गोविन्दे री चित्राम देखण जोगी हो। मूंढो काळो ठेरैं बरगो होग्यो हो। गोडा रा हाड निकळरया हा। पसीनो चूवै इकलंग। गोविन्दो तीली उठानैं चावण लागग्यो। कई देर पाछै बोल फूटयो, 'सेठ, कियां करूं, खेत तो टीडी खागी।"

"म्हारा रिपिया देणां पड़सी, गोविन्दा, ईंयां सरै कोनी। म्हारो ब्यापार कियां चालसी ! टीडो तो रोज ग्रासी, रोज खासी, म्हे कियां पोसावां, तूं स्याणो है !"

"पीसा बणैला कियां ?"

"हूं कांई करूं, कठै सूं ल्याने दे।"

गोविन्दो उठनै चल्यो गयो। बो कई दिनां तांई सेठ री दुकान कानी कोनी गयो। पण सेठ नै चैन कठै !

कई दिनां पाछै सेठ गोविन्दै नै ग्रोजूं बुलायो।

सेठ ग्रबार दूजै खण में ग्राग्यो हो। सेठ की गरमी में बोल्यो, 'गोविन्दा, पीसा देणां पड़सी।'

गोविन्दो कीं नीं बोल्यो, उठ्यो ग्रर चाल पड्यो। गोविन्दै

सेठ री अर सेठ गोविन्दे री निजर पोछाण ली। पण गोविन्दे रो मन भारी होग्यो हो। वण मन में कंयो, "किराड़ मीठो वणनें देवै, खारो वणनें लेवै।"

तीजे दिन सेठ फेर गोविन्दे नें बुलायो। सेठ वारै चूंतरी पर खड़्यो होग्यो। वो गोविन्दे नै देखतां ही बोलण लागग्यो। आज वींरो मुंवाज गोविन्दे रा लत्ता लेणे रो हो। सेठ पूरो जोर लगा दियो, 'सरम कोनी आवं तनैं, म्हारा रिपिया खाग्यो। खांड खायनें देणां पड़सी। धूड़ खायनें देणां पड़सी। हूं तेरै पर दावो कर देसूं। समझै के है तूं म्हानें !"

गोविन्दो चुप रंयो। धूण घालनें धरती नें कुचरण लागग्यो।

सेठ इत्तो जोर सूं बोल्यो के च्यारूं कानी री भींता भूंकण लागगी। च्यानण सागै वांही बातां नैं मोजूं फेवं जको सेठ कंवं जाणं च्यानण सेठ वणनें री ट्रेनिंग लेर्‌यो है।

गोविन्दो कीं सोचनें कंयो "सेठ, बोलो रह घणीं कह दी, हूं सोचली।"

गोविन्दे घरे जायनें सोच्यो, "सेठ कैवण में कसर भी राखी। आज दुनियां में साख हुवै, साख सूं लेण-देण। साख बिगड़गी तो लेण-देण बन्द। कोई उधारो नी घालेलो।" गोविन्दे आगे री पाछै री सारी बात सोची। सोचर लुगाई ने कंयो, "कठै है तेरो बोरियो।"

"क्यूं ?"

"म्हारी लाज जायरी है। सेठ स्यान लेवैलो। भगवान् देसी तो बोरियो मोजूं बणज्यासी, स्यान नहीं वणैली, समझी !"

सजनी रै गळै में पाणी रो खारो घूंट आग्यो, बा पीयनें रंगी। संदूक खोलनें बोरियो ल्या दियो। वींकी आंख्यां में पाणी झळकै हो।

गोविन्दे सेठ रै आगे रिपिया देयन मारया, सेठ रिपिया तीजूरी में मेल्या, "अरे गोविन्दा, ले आयो, इसी कांई बात ही, तकलीफ तो कोनी पाओ।"

गोविन्दो फेर कोनी बोल्यो।

सेठ फेर कैयो, "हूं तनै कीं कंय तो कोनी दियो, म्हारो सुभाव आजकलै कीं चांदड़ो होग्यो, बाळण जोगो है। घर आळा सगळा म्हानें लड़ै है, कैवै है, थारै रीस घणी रैवै। क्यानण मत्नै लड़यो, ईं'री मा भोत लड़ी, थारै कै होग्यो आजकलै, गोविन्दै रै सागै तो थांरो पीढ़ियां रो सीर है। गुण तो थे मानो ही कोनी। सायी कीं, मनै ना तो रोटी भाई ना नींद आई।'

भोळो गोविन्दो बरफ ज्यूं पीघळग्यो। बींनै सेठ ओजूं गुड़-सो मीठो लागण लागग्यो।

"तूं कांई जाणसी, गोविन्दा, क्यानण, ल्या नयोड़ा थान, इन्नै कपड़ो दे कुड़तियै रो।"

फेर दोनूं हस्या रल्या-मिल्या कै गोविन्द रै सागै ओजूं गांठ बांध दी।

गोविन्दै री चाल बोझ सूं धीमी पड़गी ही। बींनै सजनी बिनां बोरियै ही फूटरी लागण लागगी ही।

धन घड़ी धन भाग

प्रिन्सिपल शर्मा जद स्कूल में आयो तो स्कूल-बीनै हाऊ-सो लाग्यो। कदेई टाबर-थकां मा बींनै डराया करती, "हाऊ आयो हाऊ आयो।" जद बो डर्‌या करतो, पण हाऊ बण देख्यो कोनी। पण आज बण साच्यांई हाऊ देख्यो। बो तो सदा छोटै स्कूल में रह्यो, गिणती रा टाबरिया होंवता, आपरी मनंस्या मुताबक बांनै डांट लेंवतो, कूट लेंवतो, लाम्बो टैम बण बी अेक गांव में काट्यो. पण इत्ती लांबी कतार टींगरां री बण अठै ही देखी, बींयां तो ओ बड़ो नगर है, मोटी-मोटी हेल्यां, कार, बंगला, के बेरो के के है अठै, बींनै तो इत्ती लाम्बी स्कूल ई भूतणी-सी लागे। छोरां सामनै खड़्यो होयो तो बींरो काळजो पेली तो हाल्यो, पेंट पड़णनै त्यार होगी, फेर कीं जमाणो। छोरा अेक सुर सूं 'जन गण मन' रो गीत गायो, तो बींरै नाक पर माखी बैठगी, बा तो मस्ती सूं घूमै, अेकर नाक सूं फूंक मारी, बा उडी कोनी, बींरो जी मचलावण लागग्यो, अेकर

तो बींनै इसी लागी, जाणै पड़ैलो, पण फेर 'जय हे जय हे, जय हे', बोलतां ही राष्ट्रीय गीत खत्म होग्यो अर वो सांभळग्यो, माखी-बींसूं पैली उडगी ही। शर्मा टाबरां रै सामै आपरो छोटो-सो भाषण दियो, शर्मा रो जी टिकग्यो।

शर्मा दोपारै पाछै आपरै कमरे में गयो. बूशर्ट खोली. फेर पेंट सावळ टांगी, ईंमें सळ न पड़ज्या। नयो नगो स्कूल है, प्रिन्सिपल रो मोटो पद मिल्यो है, कदेई लोग हंसाई न हो ज्यावै. कोई टोक नै देवै कै, प्रिन्सिपल तो सफा देहाती है।'

प्रिन्सिपल पंखो खोलनै नीचै बैठग्यो, बनियान खोल ली, फीं भो सोरो होग्यो। शहर रा अै तो मजा ही है, पण बाळण जोगी ढींगरां अर मास्टरां री भीड़ भड़ी लागै है। प्रिन्सिपल चपरासी सूं रोटी मंगवाई अर खायनै सोग्यो।

दो चार दिनां में शर्मा नै ओ पतो लागग्यो क मास्टर अर छोरा नेता टाइप मिनख है। बींरो आज रै माहौल सूं जी उमी-जग्यो। गांव में भी नेता तो हुवै, पण बै गांव रै भलै खातर होवै। शर्माजी कनै नेता आवंता, स्कूल री बात पूछता, बीरै निरमाण री सोचता, आछी पढ़ाई लिखाई खातर केवंता, छोरा जे हुड़दंग मचावै बानैं खुद डांटता। साची बात तो आ है कै मास्टर अर छोरां में कीं भांत रा नेता जलमग्या। बैं खुद पढ़ता तो नेता तो होंवता ही कोनी। होंयता जका देस खातर होंवता। देस री आजादी री लड़ाई लड़ता, पण हुणै कोई मास्टर स्कूल में काम करणो चावै कोनी, करै नेतागिरी। अेक-अेक मास्टर अेक अेक नेता सूं जुड़रंयो है। जे प्रिन्सिपल तबादलो करा भी लेवै तो मास्टर नेता री मारफत आपरो बदळो पूठो करा लेवै। बात ईंयां है कै मास्टर अर नेता दोनूं गूंथीज्योड़ा है, आप-आपरै मतलब सूं। मास्टर

नेतानैं वोट दिरावै अर नेता मास्टरनैं आपरी जगां रखावै। वै प्रिन्सिपल रो कांई धरावै। शर्मा रै अेक बात और समझ में आई कै मास्टर आप-आप रा चेला पाळ राख्या है, जे बगत पड़ज्या तो वै मास्टर खातर ज्यान देवणनैं त्यार रेवै।

प्रिन्सिपल एक दिन आपरै पेले हैडमास्टर सूं वात करै। बोल्यो, "हूं सिच्यूएशन नैं समझतो जारैयो हूं।"

"हूं तो कैवणो चावै हो, पण थे खुद ही बात चलादो।"

"बात तो इयां चलादो कै स्कूल रो धंधो नी होरैयो है, मास्टर क्लासां न छोडै है, बारै गप्प मारता रैवै है। चाय रै ढावै पर चल्या जावै है।"

"सा, अै तो सै मंत्रियां रा आदमी है, आपणै बस रा कोनी।"

"तो औ काम कियां चालसी।"

'आप आंरी बदळी भी नी करवा सको।"

"तो म्हानैं तो आ बात सुवावै कोनी।"

'सुवावै कोनी तो कांई बताऊ ?"

हैडमास्टर आ कैवणो चावतो हो कै, "थे थांरी बदळी भलां ही करवा लेवो, अै तो हालैई नहीं। आनैं छेड़णों काळे नाग नैं छेड़णो है।"

होई भी यां ही। अेक दिन शर्मा माधोराम नैं कैयो, 'थै मा'साहब, क्लास में कोनी हा, हूं जद गयो तो छोरा थांरो घंटो बतायो, थे हा कोनी।"

"हूं सा, चाय पीवण गयो हो।"

"आ बात तो माड़ी है। आप चाय 'रिसेस' में पीवो, खाली घंटे में पीवो, आ म्हारै जचे कोनी।"

"ना जचै तो ना जचो, मैं तो अठै दस बरमां सूं हूं, कई अफसर टिपग्या, मैं तो इयां ही चाय पी।"

'हूं रहस्यूं तो पार नहीं पड़ैली," शर्मा कीं रोस कर्यो।

"रोस में क्यूं आवोसा, म्हारी शिकायत करो, म्हारी बदळी करवाद्यो। म्हांसूं मरीजै कोनी।"

शर्मा चुप रैग्यो।

चोखाराम रोज मोड़ो आवै। आयनैं पैली बीड़ी सिलगावै, टांगा पसारनैं होळै-होळै कस खींचै। क्लास रा टींगर रोळो मचावै। शर्मा अेकर वठै जरूर जावै, छोरां नैं टिकावै, डरावै, मानीटर खड़्यो करै। मन मे कर्यो—"इयां पार कियां पड़सी।"

चोखाराम नैं टोक्यां सर्यो। चोखाराम सीधो आयो, आण घेर नैं छेड़ लियो है, "गांव सूं आऊ चालनैं पांच मील, मोड़ो हो ज्यावै, कै अठै कोर्ट बिगड़ै है। टींगर है, थोड़ी देर थे सांभळल्यो तो कांई बिगड़ै। राज थानैं भी ईं बात रा पीसा देवै। म्हांसूं लीणां पीसा लेवो हो।

शर्मा मन में कर्यो, आ गाड़ी निभैली कोनी। बो सीधो इन्सपैक्टर कनै आयो। जायनैं निवेदन कर्यो—"सा, हाथ जोड़नैं बिनती करूं हूं, थे ईं शाळा सूं चार मास्टरां री बदळी करद्यो। न तो अै काम करै, न अै टैम सिर आवै। आप कैवो तो आंरी शिकायत लिखनैं देद्यूं।"

"आप गलती पर हो, प्रिन्सिपल साहब", इन्सपैक्टर कैयो।

"क्यूं सा?"

"आप आंरी बदळी खातर मत कैवो, और जकै री बदळी करावो, त्यार हूं।"

'और तो सै आपरो काम ठीक तरियां कर है।"

"पण आपनैं बेरो है कै अै च्यारूं मंत्रियां, विधायकांरा

आदमी है, थांरी बदळी करतां ही म्हारी बदळी हो ज्यावै ।"

"तो सा, म्हारो बदळी करा देवो, म्हांसूं अपमान रा घूंट पीईजे कोनी ।"

"थांरी बदळी म्हारै सारै कोनी ।"

"तो कांई करूं ?"

"काम चलावो ।"

प्रिन्सिपल शर्मा आपरै घरे आग्यो। घरे आयनै पंखो चलायो। पंखो थोळी देर चाल्यो जद शर्मा रो पसीनो सूक्यो।

थोड़ा दिनां पाछै छात्र संसद रो चुनाव हो। अेक दिन तय हुयो। छोरा आपरी दोड़धूप करणनै लागग्या।

हैडमास्टर प्रिन्सिपल नै कैयो—"ओ थे सिर फुड़ाई रो काम कर लियो।"

"कियां ?"

"अठै मास्टरां रा दो गुट है, तो छोरां रा भी दो गुट है।"

"फेर ?"

"फेर कांई, अेक गुट रो प्रधान बण्यो तो दूजो गुट सिर फोड़ी करसी।"

शर्मा आ नई अळवाद बेमतलब मोल ले ली। कांई अणसर्‌यो पड़्यो। जे चुनाव ना करातो तो कांई बिगड़ै हो। लारली साल फर्क है कै चुनाव होयो ही कोनी। फेर आ माथा पच्ची ? देश में जनराज आयो है, आपां रजत-जयंती मनावां हां। जनता में इत्ती सूझबूझ आणी चाईजै कै आपणै देश रो कांई हित है कांई अहित। अै बाहर तो आगै बध्योड़ा होवणां चाईजै। आं टाबरां रा माईत तो जनराज री जिनगी नै सीख लिया होसी। आंरो ही संस्कार आं

ांवरां में काम देवै है। फेर आंमे आ गंदी राजनीति कियां ?
ामां रो नींद कीं कम होगी।

चुनाव रो सागण दिन आयो। कुल चोपन वोट हा। इसो दुरभाग होयो कै पच्चीस-पच्चीस वोट दोनां कानीं होग्या, अेक खारिज होग्यो।

चुनाव रा सिरमोड़ अधिकारी बोल्या, "अबै कियां करां सा।"

"छोरां नै पूछ्यो, पण बराबर में नतीजो कांई।"

बात इयां होई कै गोळी काडणं पर दोनूं दळ राजी हुया। गोळी रो फैसलो अेक कानी होणो हो।

धारै ताळियां बाजी, पण दूजी पारटी मूंढो लटकायनै चालो कोनी। वां नारो दियो, "अन्याय हुयो है, फैसलो मंजूर कोनी, प्रिन्सिपल मुरदाबाद।"

शर्मा री घिग्घी बंधगी। पेंट रै मांया सूं टांगड़्या आखी धूजण लागगी। शरीर कांपणनै लागग्यो, जाणं, सीयो चढग्यो हुवै।

बण होळं-सी आपरै हेडमास्टर नैं पूछ्यो, "ओ कांई ?"
"इयां तो होती रवै, आप फिकर क्यूं करो", हेडमास्टर बोल्यो
"हैं, ओ कांई ? म्हैं तो म्हांरी जिनगी में आ बात कोनी सुणी"
प्रिन्सिपल धोजूं कंयो।

"मजो सा, लोगां रा सिर फूटज्या है।"

"अ...च्छा," आ बात सुणी तो शर्मां रो माथो घूमणनै लागग्यो हो अणं, बींनें चक्कर आवै हो।

प्रिन्सिपल नै अेटर इसी हिम्मत बंधी कै बो बारै आयो, छोरां नै समझावणो चावै हो। बारै आवंता ही छोरा धारकर

फिरग्या, श्रर जोर सूं नारो दियो, 'प्रिन्सिपल मुरदाबाद, प्रिन्सिपल मुरदाबाद, घेराव करल्यो, टींगर प्रिन्सिपल रै बारकर गरण देसी घूंमग्या—'घेराव'

प्रिन्सिपल नै मूरछा श्रावणनै त्यार होगी। पसीनै सूं हळाडोब होग्यो। 'श्रो कांई', मन में सोच्यो। छोरा लांबा-लांबा सहतीर-सा लाग्या। मास्टरां मांय सूं कोई नेड़ै नी श्रायो।

"कांई चावो हो ?" दबेड़ी जुबान स्यूं शर्मा पूछयो।

"न्याव .. न्याव," श्रेक सुर स्यूं श्रावाज़ उठी।

"कैयां"; शर्मा श्रोजूं पूछ लियो।

"खारिज होयोड़ो वोट गलत खारिज हुयो, न्याव चावां हां", छोरां हाथ जोड़नै कैयो।

'न्याव करांला, म्हारो पिंड छोड़ो।"

छोरा श्रेकै सागै परनै होग्या।

शर्मा श्रेक'र दफ्तर में गयो—गुमसुम। च्यारूं कानी श्रांख्यां फेरी, फेर मेज पर श्रांख्यां गडाली। श्रासै-पास री श्रांख्यां इसी लागै जाणै बै बीं पर हंसै ही, मसकरी करै ही, तानो मारै ही—करलै प्रिन्सिपली, तै कठैई गंडमरा देख्या है, इसै चूतियै नै म्हे कै धारां हां, तेरै बरगा बोळा देख्या है—खूंसठ।"

शर्मा श्रेकर ऊठनै श्रापरै मकान में गयो, नेड़ो ही हो, फेर श्रोजूं श्रायो। सगळा मास्टरां नै कैयो, 'श्राप लोगां नै छुट्टी है, घरे जाश्रो।'

जावंता मास्टर जोर-जोर सूं हंसै हा, पण बीं हंसी नै श्राप पर ही सोची।

सगळा चल्या गया जद शर्मा श्रेकलो रैयो। चपरासी नै कहनै श्रेक कप चाय रो मंगवायो। चाय री श्रेक श्रेक घूंट पीवतं रैयो। ऊपर सूं होळै-होळै पंखो चालै हो। चपरास्यां नै कैय दियो

"थे ही घरे जावो, हूं आपी दफ्तर न बंद कर देसूं। चाबी मनै दे ज्याओ।"

होळे-होळे चाय निवेड़ी अर आजकालै रै ईं सैर रै माहौल पर घणो अफसोस कर्‌यो। इसो अफसोस इण जिंदगी में पैली बार कर्‌यो। अेक-अेक करनै आपरै टाबरां नै याद कर्‌या, फेर आंख्यां में आंसू ले आयो, "धूड़ है ईं अफसरी में, ईं नौकरी में, ईं सूं तो आछो हो, कठैई चाय रो ढाबो सरू करता तो आजकालै वो चोखो होटल बण ज्यावंतो। आपरी नींद सोणो आपरी नींद उठणो।"

दूजै दिन प्रिन्सिपल अेक कमेटी बणादी जकी ईं चुनाव री जांच करैली। कमेटी रै मेम्बरां कनै सूं दस्तखत करा लिया। मेम्बरां आपरी मीटींग करी अर फैसलो कर्‌यो, "भाई, कीनैंही टाट फुड़ावणी है तो ओ फैसलो करियो।"

वां प्रिन्सिपल साहब नै जायनै आ बात कही, "सा'ब, आप ही मोटा हो, आप फैसलो देवण रो हक राखो हो। ओ फैसलो आप ही करो।"

शर्मा ओजूं घबरायो। करै तो काई करै। दोनां कानी गड़बड़। ओ काई होग्यो। ओ तो रोज रो झगड़ो है। कीरै सिर पर ताज मेलै। आछो वगत आयो। शर्मा आपरै पुराणै दिनां नै याद करणनै लागग्यो जद चेला मास्टर नै आपरो गुरु मानता, बांरै पगां लागता। आज बींरा चेला मोटै-मोटै होदै पर है। कदै मिल ज्यावै तो झुकनै प्रणाम करै, आशीष लेवै। आं टींगरां रो काई डोळ है। काईं बणैला अे। नेता लोग देस नै, समाज नै बिगाड़ दियो—सत्यानाश जावै आंरो।"

दूजै दिन शर्मा नै रीस आई अर बण संसद नै भंग कर दी।

फेर तो सांग थोचरणो हो। हड़ताल, क्लास में अेक ही छोरो कोनी। मास्टर आपरी क्लास में बेला बैठ्या, यानै कोई चिन्ता

कोनीं । मस्तो सूं हाजरी-रजिस्टर नें लियां बैठ्या । टींगर बारै हुड़दंग मचावै, नारा देवें, "प्रिन्सिपल मुरदाबाद, छात्र परिषद जिन्दाबाद, म्हांरी मांगां मंजूर हुवै ।"

बेला बैठ्या मास्टर आपस में फुसफुसावे—"साळै री हेकड़ी ढीली होगी, आंवतां ही अकड़चो है नी, अै टींगर च्यार दिनां में ईं नें पाघरो कर देसी ।"

बारै फेर नारा लाग्या, "प्रिन्सिपल .. मुरदाबाद, छात्र परिषद .. जिन्दाबाद ।" "म्हारी मांगां... मंजूर....हुवै ।"

शर्मा री मांय बैठ हो घिग्घी बंधगी । हैडमास्टर सारै बैठ्यो हो । दोनूं विचार करे, पण करै कांई ? च्यारूं कानी निजर पसारै, पण कीं नी दीखै, अंधेरो, घणो अंधेरो । शर्मा नें इसो लागै जाणै, मौत नैड़ी है ।

इतैं नैं वीनैं टींगरां री भीड़ आंवती दीखी । प्रिन्सिपल फोन संभाल्यो—'हलो, पुलिस, खतरो, लड़कां री भीड़, हड़ताल ।"

"हलो, कलक्टर, हड़ताल, खतरा ।"

फेर 'करण........करण . ....करण ।"

"इन्सपेक्टर, हलो, खतरा, हड़ताल, पुलिस"

हैडमास्टर फेर कैयो—"आ मास्टरां री उत्पात है सा अै चावै तो हड़ताल हुवै, टींगर सैं मारै बस मे हैं ।

"हूं देख सूं, प्रिन्सिपल दबोड़ो बोल्यो ।"

"हूं तो पैली कैयो हो, आपनें ।"

प्रिन्सिपल री हिम्मत भीड़ में जाणै री नीं हुई ।

थोड़ी देर पाछै—पत्थर, भाटा, पड़ाक, दफ्तर रो सीसो टूट्यो—भायण....भायण ।

पड़ाक, अेक भाटो हैडमास्टर रै पगां में आयनें पड़्यो ।

फड़ाक, फेर अेक सीसो टूटयो—झणणण ....झणणण,

फेर अेक भाटो प्रिंसिपल री मेज पर आयनै पड़यो ।

—"करण...करण.... हैलो पुलिस, पथराव, ज्यान रो खतरो ।"

फेर एक भाटो प्रिंसिपल रै माथै कनै कर निकळयो ।

प्रिंसिपल अर हैडमास्टर दोनूं गोडरेज री अलमारी कनै जाय छिप्या । दोनूं वतळावै नीं । बारै भीड़ रा नारा । दोनां रा कान बेरा होग्या । आछो हो दोनूं किंवाड़ स्केड़ा हा ।

इत्तै मैं दोनां नै लाठयां-सी बाजती सुणीजी । अेक गोळी चाली । भीड़ भाजण लागी । प्रिंसिपल अर हैडमास्टर कोचरै मांय सूं देख्यो, वतळाया—स्यात् पुलिस आगी, गोळी चाली है, कोई मर्यो तो कोनी । भीड़ बानै भाजेड़ी-सी लागी ।

दोनां रो कीं जी टिक्यो ।

प्रिंसिपल बोल्यो, "आग लागै ईं नौकरी रै, चिणा भूननै पेट भर लेंवता, वो आछो हो ।"

बार सूं दरवाजो खटखटीज्यो—खट, खट, खट "पुलिस आळा है", हैडमास्टर कीं उकसनै कैयो ।

दोनूं आलमारी री ओट सूं बारै निकल्या । दरवाजो खोल्यो, ईंनै बीनै देख्यो, जी टिक्यो, टींगर तो गया ।

दोनां थोड़ी देर बैठनै पसीनो सुकायो, फेर पुलिस आळा सूं बांत करी ।

पुलिस आळो सी.आई. बोल्यो, "मा'ट साहब, बात म बात रो नाम, बिना ही मतलब आप तो राड़ बधा राखी है ।"

"हां सा", शर्मा कैयो, "आ तो हूं ही जाणूं के बात रो बतंगड़ बणर्यो है ।"

"बात तो मिटावो, आप गुरु जन हो, टाबरां पर आपरो

असर होणों चाईजै ।"

"असर तो सी. आई. साहब होणै कोनी देवै", हैडमास्टर साहब कैयी, "टाबरां पर असर तो है ही, पण चमरकी लगावण आळां रो है ।"

'आ तो हूं समझूं," सी. आई. फेर बोल्यो, "हूं तो आं पांच-दस साळा सूं हड़तालां ही देखूं हूं, टींगरां री कुचमाद बिना थारै गुरुआं रै लगाव बिना नीं होवै । बुझाण आळै सूं लगावण आळो तकड़ो हुवै । अबार नुकसान हो ज्यावतो । पुलिस आळा पर टींगरां पथराव शरु कर दियो, आंसूगैस छोडी, लाठी चारज करी, म्है भी टायर पाळां हां । मरणै खातर तो कोनी जलम्या, फेर अेक खाली फायर, जद टींगर बिदग्या, अबार तो शान्ति है, पण आर मांरो समझोतो करवा देओ ।"

प्रिंसिपल स्टाफ री मीटींग करी । कई कानूनी वातां आई । शर्मा सगळी वातां सुणतो रैयो, अेक अेक नै पढ़तो रैयो ।

शर्मा अेक ही बात कैयी, 'अठै कानून मत चलाओ, कोई समझोतो होवै जकै सूं गाड़ी बधै ।'

अेक कमेटी समझोतै कानी बणी ।

कमेटी वीं वगत ही आपरो काम चालू कर्यो । दोनां दळां रा प्रधानां नै भेळा कर्या ।

मीटींग चार घंटा चाली, बीमें च्यार बार चाय पीईजी, पण पद अेक, मिनख दो । पद रा टुकड़ा होया कोनी, समझोतो होवै तो कियां ।

कमेटी में दोनूं दळां रा दो दो आदमी, दोनूं प्रधानां सूं सलाह मसौरा करनै बणी । अेक प्रतिनिधि प्रिंसिपल रो आपरो ।

चार घंटा पाछै कमेटी रा सदस्य प्रिंसिपल कनै आया ।

"समझोतो कोनी हुयो सा, हड़ताल तो ईंयां ही चलती

लागै। आपनैं आछी लागै ज्यूं करो।"

"बात कांई है ? म्हानै बताओ", शरमा बोल्यो।

"दोनूं प्रधान बणणो चावैं, कैयां बणै", कमेटी कैयो।

"हूं, तीजो मिनख ?"

"थांरै कोनी जचे।"

"हूं, आप कानी सूं बणा देऊं।"

"कोनी मानै।"

"हूं", शर्मा फिकर में पड़ग्यो, जणै, बींरै काळजे में राध भरगी।

"अंक काम करो !"

"हां सा"

"प्रधान रो पद अंक नै देद्यो, जको जीत्यो वीनै।"

"दूजै न ?"

"दूजै नै हूं म्हारो पद दे देसूं-अध्यक्ष।"

"क्यूं भाई", कमेटी कैयो।

दोनां कानी ताल्यां बाजगी। धन घड़ी धन भाग, सगळां रा चैरा चिमकणनैं लागग्या।

शर्मा रै सूक्योड़ै मूंडै पर आब आगी। बो पैली मुळक्यो, फेर जोर-जोर सूं हंस्यो, ध्यान छूटी, लाखां रा होग्या।

चिमनी रो च्यानणो

••

ठाकर सा पडतजी नैं रोटी जिमावंता बोल्या, 'पंडतजी, टोटो तो मणा रो है, कणा रो नी, आपरो ओ घर है, आप पधारो तो ओ दरवाजो आपरै वास्तै सदा खुलो है।'

पंडत हाथ धोयनै ठाकर भैरूंसिह नैं घणी-घणी आसीस दीनी। हाथ पूंछनै ढोलिय पर आडा होग्या। माथै रै नीचै ओसींचो ले लीन्यो। धापोड़ै पेट री मांस्यां में ज्यान बापरगी। पंडत जी बींया जमानै नै परख्योड़ा मिनख हा। बीसूं ठाकर रो पुराणों ठाठ-बाठ छानो कांई। अेक-अेक वगत में बीस-बीस वटाऊ रोटी जीमता। गढ़ में बड़योड़ो मिनख भूखो नीं जावंतो—गरीब न गरीब सारू, अमीर नै अमीर सारू। पोळो पर हाथी झूमता, कांगरां पर दीया जगता जद कोसां च्यानणों होवंतो। नगाड़ा वाजता जद पड़ोसी गांवां रा कान खड़्या हो ज्यावंता। ठाकर जीनैं कोप सूं जोवंतो, बीनैं आग-सी पाटती। जीनै निजर ठंडी

होवंती, वीनें मेह-सो बरसतो। पंडत जी फेर गढ़ कानी देख्यो। फूटयोड़ो, टूटयोड़ो, च्यारूं कानी खाडा पड़योड़ा, जाणे गढ़ में कई बारणां निकल्योड़ा है। बगत बदल्यो है, हवा बदळी है। भारत रे मिनख रो दिन फुर्‌यो है, प्राछो या माड़ो प्रो राम जाणे है।

ठाकर लोटो थाळी चकनें रावळे कानी चाल्या। कदेई प्रो ही काम गढ़ रा गोला करता। हणे गोला रो कसूर कांई? वे तो रंवणो चावंता। पण ठाकर खुद ही जवाब दे दीन्यो। वे प्राप॰ प्रापरे ठेढे लागग्या। प्रवार वे तो ठाकर सूं ही घणीं मोज करे। रंवण नें प्राछो घर; करण नें इज्जत रो काम, लोग-लुगाई छोरा-छापरा सौ ही कमावे। टोटो क्यांरो?

ठाकर रसोई में वड़्या तो ठुकराणी रसोई रे काम सूं निपट ली ही। पसीने सूं न्हायोड़ी बारे निकळी। ठाकर नें देखतां ही बोली, "पंडत जी प्रारोग लिया कांई?"

"प्रारोग लिया, प्राटो सरग्यो?", ठाकर पूछयो।

"सरग्यो, रोटी दो वच्योड़ी है," ठुकराणी कह्यो।

"कोई नीं, एक थारे खातर अेक म्हारे खातर," कैन ठाकर ठुकराणी री पीठ थापी, "घर री इज्जत, घर री शान, प्रा तो राखणीज है।"

ठुकराणी सिसकार्‌यो मार्‌यो। ई सिसकारे में सो-क्यूं लखावे। समझण प्राळो समझे प्रणजाण कांई। ठाकर समझ राखे हो।

फाटयोड़ी प्रोढ़णी सूं पून घालतो ठुकरानी कयो, "वटाऊ भूखो रंणो नी चाहीजे। टाबरां रो गुजारो होग्यो। फणक री रोटी खातर लई ही, मसां थाग्या।"

"प्राटो कठै सूं मिल्यो?", ठाकर पूछयो।

"पड़ोसण कज, पण वड़ो दोरो।", बोली, "पली माळो बावड़्यो कोनी।"

"सागं ही देवांला, कैयो कोनी थे ?"

"कैयो जद ही तो मिल्यो।"

ठुकराणी बारै बैठने पसीनो सुकावण लागी। सरीर इसो बणर्‌यो हो जाणे, सुक्योड़ो संतरो हुवै। कदे ओ ही सरीर फूलां री सेजां सोवंतो, गुलाब रै फूलां रै पाणीं सूं न्हावंतो।

ठाकर पंडाजी नैं ओढ़ण-बिछावण रा कपड़ा देवण नैं कोठार में हाथ मार्‌यो। घणां ही पूर पड़्या हा पण पुराणां। बारै काढ़ अर खोलनै देखै। सगळा में चांदपोळ बणर्‌या हा। आखर आप आळी रजाई अर गदरियो लेग्या।

ठाकर-सा आयनै थाळ पर बिराज्या। बाजोट पर थाळ मेल्यो। कटोर्‌यां में सब्जी लीनी अर फलको मेल्यो। हाथ धोया, भगवान नैं सिमर्‌यो अर अेक कोवो मूंढ कानीं कर्‌यो इत्तै में गांव रो चोकीदार आयो, "खम्मा-अन्नदाता थण्यां री जय बणी रैवै।"

"कियां आयो रे, चौकीदार ?"

"म्हारी रोटी, ठाकरां ?"

ठाकर रो कोवो हाथ रो हाथ में थमग्यो, आगै चाल्योनी। ठुकराणी उठी अर आपरी रोटी उठाने चोकीदार री झोळी में गेर दीनी। चोकीदार ठाकर री जय बोलतो रावळै सूं बारै टिपग्यो।

ठाकर अर ठुकराणी दोनूं सागै आरोगण ने लाग्या। बीं अंधेरै में जे कीरी दुख बारै भी निकल्यो तो दीस्यो नी। दोनूं ऊपर पाणी पीयनैं धू होग्या।

ठाकर अर ठुकराणी डागळै पर कमरै में सोया करता। नैड़ै

नई जायनै पलंगा पर सोग्या। कमरै में चिमनी रो च्यानणो हो। मोड़ै तांई नींद आई नीं। च्यानणे में भींत री फोटुग्रां ज्यूं री ज्यूं दीखै ही। अेक फोटू में ठाकर हाथी रै होदै पर चढयोड़ो हो, सिर पर ब्याव रो सेवरो, दोनूं कानी चंवर ढुळै। आगै बीण वाजा वाजै।

बीजी फोटू में च्यारूं कानी बाजोट ढळर्या। वाजोटां पर दारू री बोतलां। आगै नाच होर्या हा। लोग दारू में झूमर्या है।

तीजी फोटू ठाकर री अेकली, जुवानी रो माच्योड़ो, मूंडै पर बांकड़ली मूंछ्यां, गळै में तलवार लटकै।

च.णचकै ठाकर आपरै सामलै टंग्योड़ै मोटै दरपण में आपरो मूंडो देख लियो। ठाकर ठुकराणी नै कैयो, "जागै है!"

"हां-सा"

"नींद कोनी आई?"

"नी तो।"

"चिमनी नै फूंक मारदयो, च्यानणै में नींद कोनी आवै।"

ठुकराणी चिमनी रै फूंक मार दी। चिमनी बुझगी। ठाकर मूंडो ढक लियो, आंख मींच ली। पण [illegible] अंधेरै में भी वै पुराणी फोटुवां अर [illegible] ठाकर नै ज्यूं री ज्यूं दीसै।

पीला हाथ : कालो मूंढो

सूरज री उगाळी सूं पैली गणेशो आपरै खेत में जा पूंच्यो। खेत में नीनाण मारी ही। बाजरी, मोठ, गुंवार हिराळी मारै ही। मतीरिया, काकड़िया री वेल्यां पेट पसार्‌यां पड़ी ही। गणेशै री बेटो फूसियो कसियो लेयनै नीनाण में जुट्‌र्‌यो हो, सोनै रो सूरज ऊग्यो। च्यारूं कूंटां जगमगायी। गणेशै रो हिवड़ो हरख भर्‌यो हो। इत्तै नै परनै सूं गावड़ती खेत में वड़न लागी। गणेशै हेलो मार्‌यो, "ओ रै फूसिया, गावड़ती नै काढी।"

फूसियो गावड़ी नै काढणनै भाज्यो। गणेशै रो घणों जी सोरो। ईसी खेती थां बरसां में नी मिली।

फूसियै री मा नाराणी भातो लेयनै आगी। फोजियै नै नीचै बैठा दियो। गणेशै रै दो ही टाबर हा। फूसियो बीस साल रो लंगड़ो होर्‌यो हो। बीच में कई टाबर हुया, जियानी। कई डोरा-डांडा कराया। कोई मीनै, दो मीनां, कोई तीन मीनां, टाबर

सूकनै मरग्या। टावरां नै चोखै स्याणां नै दिखाया, पण पार नी पड़ी। कीं स्याणी रै कँवणै सूं अबकै छोरै रो नांव कोजियो काढ्यो।

कोजियो पांच ६ मीनां रो तो होग्यो हो, बैठणनै लागग्यो हो। नाराणी री खुसी रो ठिकाणो नी। पण काया रै सागै कस्ट लाग्या रेवै। धूप-छांव रो मेळ है। गणेशो ही खुस, पण फूसियै रो ब्याव होवै तो गंगा नहाया हो ज्यावां।

गणेशै नै तो मोटयार जुवान फूसियै रो सारो होग्यो। झांझरकै उठनै खेत मैं आ ज्यावै। हळ वा लेवै, नीनाण कर लेवै, कूतर काट लेवै, और कांई चाईजे! पण नाराणी रो जीसोरो तो फूसियै रै ब्याव सूं होवै। चाकी रो हाथो बींसूं छूटै।

नाराणी धापरै मोटयार नै रोटी घाल दी। टींडसी रो साग हो। काल स्यांमनै जावंती बिरियां लेयनै गई ही। फोगलै रो राइतो हो। सागै कांदा भी ल्याई ही। गणेशो रोटी खायनै धू होग्यो। डीवै पर आडो होयनै बोल्यो, "क्यूं अे, फूसियै री मा, बाजरी किसी'क!"

"बाजरी!" कहनै नाराणी खेत कानी निजर मारी। खेती तो बा रोज देखै ही। फूसियै रै बाप री मन री बात समझगी ही। पछवा रै हिंडाळै में झूलती हिराळी कानी देखनै धीसोरै सूं नाराणी बोली, "बाजरी तो फूसियै रो ब्याव-ब्याव करै है।"

"तूं कँवै तो मांड आऊं फूलरिया दूज रो ब्याव", गणेशो कीं उठनै बोल्यो।

"नाज काढनै चला ज्याओ", नाराणी रो विचार हो।

× × ×

गणेशै री कोठी बाजरी सूं भरीजगी। ब्याव फूलरिया दूज

री मंहग्यो। दस तोळा सोनो, मंहगै सूं मंहगा वीत–बीनणी रा गाभा। गांव रै चोखा आदमियां री मोटी बरात। ब्याव होग्यो धूमधड़ाकैं सूं। बीनणी घरे आगी। छोर्‌यां छापर्‌यां मूंडो देख्यो, घणीं फूटरी, पून्यू रो चांद, गुलाब रो फूल, सूबै रै चूंच-सी नाक, पतळा पापड़-सा होठ, और कांई चाईजें।

गणेशो अर नाराणी रो जाणै घर भरग्यो। जाणै घर रै आंगणे में चांदणी उतरगी, सपनो साचो होग्यो। पण कोठी मूंडो बायें ही, सेठ री बही में दो हजार और लिखीजग्या। गणेशो बोल्यो, "नाराणी, पीसा तो खासा करजे होग्या।"

"कोई नीं," नाराणी बोली, "दाता है देवणियो। सांवरियो देसी तो अेक साल में उतर ज्यासी। बहू रो मूंह तो देख लियो। गोर सी फूटरी है बहू। देखी ही थे ?"

"हट बावळी, मजाक करणनै तूं ही लाध्यो", गणशो नाराणी कानी देखनै हांस्यो। नाराणी रा सळ पड्योड़ा गाल भेळा होग्या। बीं रो चोखटो चिमकण लागग्यो। नाराणी आंगणे में चलीगी।

दो साल सोधा काळ रा निकळग्या। दो हजार सीधा साढे तीन हजार होग्या। बहू घर में आणजाण लागगी। अेक टाबर री मा होगी।

नाराणी बारै चूंतरी पर पोतै नै खिलावै ही। पण काळजै में और तरियां होरी ही। खायो हो जको ऊपर ही पड़्यो हो। बहू पाणी स्यान छोड़ दियो हो पण मांय ही मांय "बट्, बट्, बट" करै हो।

"कांई आग लागरी है तेरै," नाराणी बोली, "कळहगार रांड, धूधराणें री कठै सूं मेरै फूसियै रै करम में लिख्योड़ी ही।" नाराणी री काया कांपणे लागरी ही।

इत्तै में पड़ौसण बठै हो आगी। "कांई बात है जेठाणी," बा नाराणी री देराणी ही।

नाराणी बोली, "कांई बताऊं, देराणी, म्हारो घर तो कळह रो घर बणग्यो। श्रेड़ी करमहीण घर में आई है कै जकै साल सूं घर में आई है, अेक दाणों घर में कोनी बापर्यो। आ, कदेही घड़ियो फोड़ देवै, कदे हांडो तोड़ देवै, कदे दूध ढोळ देवै। कांई लागर्यो है हाथ में, राम जाणें। नाग चोटो, इत्तो बेसूरी है कै पूछ मत। म्हारै तो बहू के आई, घर रो खोगाळ आग्यो।"

देराणी कीं कैऊ ही, पण बीसूं पैली हो फूसियै री बहू नाराणी रै सांमै आयनै ऊभी हुई जाणें, कोई सौत ऊभी हुवै।

"क्यूं अे सासू," बा बीरै मूंढै पर हो कंवण लागगी, "तूं जे इसी भागण ही तो बणायो कोनी सोनैं रो माळियो, तूं मेरै भागन बिसरावै, तूं तेरलै कानी तो देख। तेरा ठाग फूटज्या तो मेरै सारै है। काम करासी तो ईंया ही फूटसी। कर लिया कर तेरो आपो ही।"

"जा, जा, कूपराणें री। रांड री ओभरियो फोड़दयूंली", नाराणी पूरै जोर सूं बकी। फेर टीगर नै फेंकनै मार्यो।

"मेरै पीरनैं बिसरायो तो जाणें ही है, जीभ काडल्यूंली", फूसियै री बहू रोंवती गोगल नै उठावंती बोली।

देखतां-देखतां बींरो चूंटो बींरै हाथ अर बींरो चूंटो बींरै हाथ। नाराणी बूढ़ो अर कमजोर हीं, रास में जा पड़ी। बींरो मूंढो काळो होग्यो।

आथणनैं पंचायत हुई। गणेशं फूसियै नैं कंवणं में कसर नी राखी। पण फूसियो आपरी बहू रै सीर बोल्यो। छेकड़ली बात बण आ ही कयी, "मा री सुभाव खरड़ो है।" जकै दिन स्यूं

फूसियो न्यारो होग्यो ।

आधी जमीन में अबार गणेशो अर नाराणी अेकला आकडोडं ज्यूं आंख काडै । दोनां री आंख्यां में गीड आरी हो, काम हाथां सूं होवै नी । कोजियो तो ओजूं ऊधाड़ो ही फिरै हो । गणेशो हळ छोड़नै बोल्यो, "बावळी ट।ट, तू आछो चाकी छुटाई, ओ हळियो मेरै गळै ओर लगा दियो । हूं कांई करूं ?"

नाराणी भालो नीचै मेल दियो ।

"मेरो तो मूंढो राख में होग्यो हो, काळस ओजूं तांई कोनी मिटी", नाराणी कोजियै नै हेलो मारतां कंयो ।

'आं पीळां हातां सूं तो मूंढो ही काळो होसी", गणेशो आ कैयनै बैठग्यो । बीरा गोडा जुड़ग्या हा । बैठतां हाड बाजण लागग्या—कटड़ड़ड़....कटड़ड़ड़ ।

"कोजियै खातर आछी बहू ल्यासूं", कोजियो आवंतां ही नाराणी बोली ।

गणेशो हड़ हड़ हंसणनै लागग्यो, जद छाती रा कीं जंतर खुल्या ।

आपो

••

भोलनाथ रिटायर होणं सूं पैलो ही आ सोचतो ही के आपां नै रिटायर होणैं पाछै गांव चालणो है। भोलानाथ रै दो टाबर है अर अेक घर आळी। टाबरां में अेक लड़की—वीणा, व्याणंजोग, लड़को अवार नौकरी लागग्यो अजमेर में अेल. डी. सी.।

भोळानाथ नैं आगै री जिनगी रो फिकर घणां दिनां सूं होग्यो है। गांव में घर रो मकान, घर री जमीन। और कांई चाईजै। भोळानाथ री बहू राजी ही है। बा नौकरी में ही छुट्टयां में गांव जावंती जद बा अड़ोस-पड़ोस में मिलती, इत्ती घुलयोड़ी तो कोनी ही, पण वींसूं घर छानो कोनी हो।

भोळानाथ घणी वार आपरी बहू सूं बतळावतो, "वीस बीघा तो आपणै जमीन ही है। भाईजी हुणै तो बावैं हा, पण आपां जावांला जद वांनै जमीन तो छोड़णी ही पड़सी।"

राधा हां में हां मिला दी। बा आयी जाणै ही के अठै रेवणं सूं

साभ हो कांई ! मकान रो किरायो लागं । धन्धो और कोई है कोनी । कीं प्राइवेट स्कूल में नोकरी चाहे करल्यो । पण जी कोनी मान्यो ।

भोळानाथ नै ई शहर में रेवंता दस साल होग्या । म्हां दिनां में बण अेक ही स्कूल में पढ़ायो । घणकरा छोरा पढ़नै नोकरी लागग्या । संदमेंद तो घणी होगी ही । पण रुजगार बिना रेवणों कियां हुवै । ग्रेच्युटी रा की पीसा मिलसी, जका वीणा रै ब्याव खातर राख लेस्यां । की पेन्शन आवेली अर की खेत में हो जासी, गाड़ी गुड़णनै लाग जासी ।

वीणा राजी कोनी ही । बा आपरी सखी सहेल्यां में इसी घुळगी ही कै बा बार-बार मा-बाप नै टोकती रेवंती, "पिता जी, आपां गांव कोनी चालां ।"

पण अेक दिन भोळानाथ टाबरां समेत गांव चाल पड्यो ।

आवंता ही मा-बेटी घर बुहार्‌यो, घर सुंवार्‌यो । इत्ता दिनां में घर रो सित्यानास होरयो है । मिनखां बिना घर कठै, बो तो भूतां रो डेरो बण्यो रेवै है ।

भोळानाथ सूं भड़ौसी-पड़ौसी, भाई-भतीजा मिलणै आया ।

भोळानाथ बैठक मे बैठ्यो हो । दिन छिपण सूं पैली रावतो अर दोलो दोनूं आया । दोनां मास्टर जी रै आगै पड्यै बीड़ी बंडल सूं अेक-अेक बीड़ी काढी, कनै पड़ी माचिस सूं सिलगाई अर लाग्या सुट मारणनै ।

दोलो बोल्यो, 'तो मास्टरजी आखर आग्या ।"

'आणो ही पड़ै, सगळा ही आग्या, मास्टरजी रै के टाल सटकै ही", रावतै हुंकारो दियो ।

"मास्टरजी रै कांई है भई, की पेन्शन रा पीसा आ जासी,

जमीनड़ो है हो", दोलै कैयो, "गाडी चाल वोकरसी ।"

रावतै री बीड़ी बुझगी ही । पण ओजूं सींख बाळी । फेर बोल्यो, "वै मावा कठै है ! घोळफूलियो होयो रंवतो । पतो तो हमैं लागसी । वडा काचा मजा लूंट्या । म्हे भी तो तेरा संगळिया हां । म्हे तो अठै रेत में रूळता, ओ कुरसी घाल्यां पंखा री हवा लैवंतो । म्हे भी तो लुगाई रा जाया हां ।

लगतां ही दोलो बोल पड़्यो, "अरे भई, भोळो के आपां सूं लेरै रैयसी । आखर तो ईं रेत रै सारै लागणो पड़ै । आपणे गांव मैं कित्ता मोटा-मोटा अफसर रैया । जुगलो थाणेदार हो, बुद्धो गिरदावळ, झूझो पटवारी हो । झकमारनै अठै ही आया ।"

भोळानाथ दोनां री वातां सुणे हो । गांव आणे रो कोड मन मैं चढ्यो हो, बो कीं कीं फीको पड़ण लाग्यो । इत्तै नै राधा चाय लेयनै आगी । रावतो राधानै देखनै कैयो, "भाभी, दोय और बैठ्या है । भाईजी कांई अेकला ही चाय पीसी ।"

राधा दो कप और ल्याई । रावतै अर दोलै चाय पी । अेक-अेक बीड़ी और सिलगाई । भोळानाथ मकोड़ै री तरियां दोलड़ो होयनै माड़ो-सो होग्यो । मांची मैं अेक कानी सिकुड़ग्यो ।

× × ×

जेठ रो चानड़ो दोपारो । कोठै में भेळी होयोड़ी हुमस । राधा एक कानी सूवयोड़ी खेलरी-सी पंखो घुमावै, पलंग पर सूवयेड़ो सो भोळानाथ । वीणा वारै गयोड़ी ही ।

'बड़ी गरमी पड़ै है अठै तो", राधा कैयो ।

भोलानाथ हामी भरी अर इकलंग पंखे ने घुमावै । कीं आडो होंवतो बोल्यो, "कांई करां, चैन ही कोनी मिलै, बाळणजोगा ढूंढा ही इस्या बण्योड़ा है, कठै सूंई पून उडनै कोनी आवै । दूजा

बणावां तो पीसा कठै !"

"काल जिठाणी आई ही।"

"कांई कैवे ही ?"

"कैवे ही कै कीं पीसा देवो तो जमीन छुड़ाल्यां, रहण पड़ी है।"

"तूं कांई कैयो ?"

"हूं कैयो, पीसा कठै।"

"पीसा री हामी मत भरलेई, म्हानै तो ब्याव करणो है, भाई जी म्हनै भी कैयो हो।"

"राम नीसर्‌यो है, म्हे कांई तैहसीलदार हां, म्हारै कनै ऊपर लो पीसो आयोड़ो है कांई, कियां गाड़ी गुड़ावां हां, म्हे ही जाणा हां।" जिठाणी खीजनै गई।

"ईयां खीजै तो खीजण दे।"

"आपणी जमीन रो कियां करस्यां ?"

"भाई जी नै कैयो है, छोड़णी तो पड़सी ही। घणी वायली।"

इत्तै में कीं वायरियै रो लहरको आयो। दोनां रै शरीरां नै छूग्यो। कीं जी सोरो होयो, जद राधा बोली, "आपां तो धींगाणै ही अठै आया, पंखै रै नीचै गरमी तो सुख सूं निकळ ज्यावंती।"

भोळानाथ रै जी में कीं और तरियां हुई। बींनै महसूस हुई जाणै जिन्दगानी रा बाकी दिन माड़ा ही नीवड़सी।

आथणनै सूरज रो गरव कीं फीको पड़र्‌यो हो। वायरियो की तेजी पर हो। तेजी रै सागै कीं गरमी री तासीर ही। भोळा-नाथ बारै चूंतरी पर बैठ्यो हो। आसैं-पासैं दो मूढा हा जकां रा हाथां रा सींखिया ऊपरनै आग्या हा। अेक मूढै पर भोळानाथ रा मोटा भाई आसाराम आ बैठ्या। वात तो छिड़णी ही। भोळानाथ

कैयो, "भाई जी, हमैं तो जमीन आप म्हानैं देस्यो हो। म्हारैं तो अवार जमीन रो ही सारो रैसी।"

आसाराम बोल्यो, 'तू तो भोळानाथ भोळो ही रैयो, बावळा तेरै सूं किसो खेती हुवै। खेती में तो रेत में रळणो पड़ै।"

"आया हां तो रेत में रळस्यां ही।"

"खेती में काढसी कांई, म्हानैं देखलै, ऊपरलो पानो आयो ही कोनी। मांगतोड़ा घर रा लेवड़ा तो उतार लेग्या। काया सांगरी ज्यूं सूकरी है। तू रैयोड़ो अमीर आदमी। दो दिनां में खोखो-सो वणज्यासी। फेर तेरी मरजी।"

"भाई जी, फेर करसां कांई ?"

"कोई दुकानड़ी करलै, हूं तो आ ही राय देवूं, दो पीसां री कमाई तो हुवै। म्हानैं ही तो कीं सारो मिलै। खेती में कांई धर्‌यो है। घर मैं भूवाजी बड़ ज्यासी। ऊमर में कोनी निकळैली। मैं तो तनै काल ही कैयो हो।"

भोळानाथ भाई रै सागै आंख मिला नी देख्यो हो। सदा ही कांणकायदो राख्यो। कई देर तांई दोनां कानी गुमसुम रैयो। भोळानाथ धूण घालन मांची री दावण गिणनै लागग्यो। आखर आसाराम बोल्यो, 'हूँ तनै अेक बात कही काल।"

"कांई ?"

'पीसां री।"

"..........."

"तू बोल्यो कोनी ?"

"बोलूं कांई सो।"

"हां, नां, कीं तो बोलसा ?"

"..........."

"क्यूं ? लुगाई ने पूछणो है तो पूछले।"

"भाई जी, पीसा तो है ही कोनी।"

"म्हारे सूं छाना तो कोनी, भोळा।"

"भाई जी........."

"अरे, दो सालां सूं काळ पड़्यो जद तनें टोक्यो है, बाणियै रो तकादो है, वण नोटिस दे दियो, अबै दावो करेलो। इज्जत आवरू माटी में मिलरी है!"

"........."

"कांई लुगाई रो सिखायेड़ो है।"

"भाई जी," भोळानाथ कैयो, "उलटी बात क्यूं करो, पीसा थांरे स्यूं आछा हा।"

"तूं फेर जमीन मांळै", आसाराम गरम होयनें कयो, "तैं तो टींगरां रा कान खींच्या है, तनें घर बार रो कांई बेरो। आज तूं जमीन चावै। मा—बाप रा ओसर तूं कर्‌या कांई? बहन सुवासणी तेरै कामी आवै? बटाऊ-चंटाऊ रा खरचा तूं कर्‌या? आज जे जमीन चावै तो भर दे च्यार हजार।"

राधा कूणें लागोड़ी बात सुणे ही। जेठ जी सूं बोलती तो बात सुणा देती। बातां सूं बींरो कोथळियो भर्‌योड़ो हो। पण भोळानाथ थूक गिटनें चुप रैग्यो। टुकर-टुकर मांची री मूंज देखतो रैयो। वण मन में सोच्यो, स्यात् तूं ओजूं टाबर ही है, रिटायर होग्यो तो कांई होग्यो। जिन्दगाणी ओजूं तूं पोथी में बांची, धरती पर उतरती कोनी देखी। आसाराम बात सुणानें चल्यो गयो।

वीणा अड़ोस-पड़ोस रै घरां सूं घूमनें घरे आई। आवंता ही

बोली, मा, अठै तो मनै आवडै कोनी।"

"क्यूं बेटी ?"

'अठै कांई है, म्हारी ड्रेस री टींगर्‌यां मजाक उड़ावै। छोरा म्हारै कानी घूर-घूर देखै। बात करणै रो तोर तरीको ही कोनी।"

इत्तै में मा री निजर बीणा रै कान कन गई। बींरी गोरी चामड़ी पर काळो तिल सो दीख्यो।

"ओ कांई ?" मा बोली, अर बण हाथ लगायो, "अरै जूं"

मा अचरज कर्‌यो, "आ कठै सूं ल्याई, बेटी ?"

"मा, अठै जूं, लीक भोत है," बीणा बोली, "डेरा छोर्‌यां रै सिर में सळफळावै।"

"हैं.........!"

राधा इचरज कर्‌यो अर अेक लांबो सिसकारो मार्‌यो।

भोळानाथ बारै सूं आयर मूढै पर बैठ्यो हो। राधा कानी देखनै बोल्यो, "कांई होरयो है ?"

"होरयो कांई है ?" देखो, कित्तो मोटो ढेरो, अर बण नीचै मेलनै मार्‌यो, पटीड़ बोल्यो।

भोळानाथ रो दुख ऊफणग्यो, "हूं तो अठै आवो देखनै आयो। पण अठै तो ईसकै री बांस लोगां में भररी है। पतो नी अै लोग कदसूं माळा फेरै हा कै हूं आंरै सागै मिलनै रेत में रुळूं। दुनियां कित्ती गुणचोर है। कित्ता नै नोकरी लगाई, कित्ता रा टाबर पढ़ाया। सगळा गुण भूलग्या। हूं तो अेक मीनै में बावळो होग्यो। अठै जे ओर रैग्या तो लोग जींवतां नै मार लेसी।"

वीणा बोली, "पिताजी, ऐ तो थोड़ा ही दिनां में सूकग्या।"

"तू थेरो ही मूंडो देख, काळो ढेरो-सो बणगो।"

"घर मा?"

"मा धोहे ज्यूं सूकगी।"

"तो........" राधा पूछयो।

"हूं दो हजार में मकान बेच आयो। दो दिनां में रजिस्टरी हो जासी। फेर आपां चालस्यां।"

आ बात सुणी जाणी जाणै, हमता यादें सांटा थोपरणी हुवै, सावन रा लोर माथै में भूमणी लागग्या हुवै।

मौत री गोठ

जगरूप जद दिनगै उठ्यो तो बींरो जीसोरो कोनी हो। सूरज री किरणां साम्है कोठै माथै चिपरी ही, चाय रो प्यालो हाथ में लेयनै चूसण लागग्यो, सागै अेक सिगरेट सिलगाली, जद जगरूप री बहू कांता सीधी गळै नै आई, "रात सारी तो खांसता काढी, दिनगै उठतां ही सागण बीमारी नै फेर झालली।"

जगरूप सोक्यूं सुण सकै है पण ईं सिगरेट री बुराई कोनी सुहावै। बो आ भी जाण है कै सिगरेट सूं पीसा री हाण है, काया री हाण है, पण और कांई पीवै। न जाणै फेर भी बीनै सिगरेट प्यारी लागै।

जगरूप अेक कस सिगरेट रो खीचै अर अेक घूंट चाय री पीवै। साम्है कांता बाळ खिडायां बीं कानी जोवै, कांता सूं सिगरेट फूटरी लागै ही।

रात नै जद जगरूप सोयो हो, घणकरी देर बींनै नींद कोनी आई,

कीं तो रात ही कळखारी ही, हवा में हूमस ही, वेतरियां गिरमी बरसै हो, फेर कई देर तांई टाबरां नै नींद कोनी आई। इन्दर रो दिन में कान दूखै हो। बो दिन में स्कूल सूं बेगो आग्यो, रीता न जाण क्यूं मा सूं रूसगी ही, बा बिना खाये सोगी ही, मा बीनै धूतळै ही, कियां ही जागनै कीं खालै-पीलै तो मा रो जी सोरो हुवै अर ठांव मांजनै काम सूं पिंड छुड़ावै, नानड़ियो पड़्यो पड़्यो करळावै हो। जद जगरूप मन में सोच्यो, अबै बीनै ओपरेशन करा लेणो चाइजै, दो छोरा है, एक छोरी है। बण विजळी रै लट्टू री रोशनी में कांता रो मूंढो देख्यो, कित्ती बोदी लागै ही कांता। जद बा आई ही ई घर में, जद कित्तीक फूटरी ही जाणै...। जगरूप नै कांता खातर उपमा कोनी लाधी।

जगरूप नै नींद कोनी आई, कांता आखो काम समेटनै सोगी, नींद आवणनै लागगी। जगरूप आपरो हाथ ऊपर मेल्यो, कांता फैंकनै अेक कानी मार्‌यो। जगरूप रो मन भारीजग्यो। बो अेक कानी मूंढो फेरनै सोवण लागग्यो। अैड़ी हूमस होरी ही, पून अेकदम बंद ही, जगरूप ई नै-बीनै पसवाड़ो फेरतो रैयो, बीनै पतो नी लाग्यो, कद बीनै नींद आई।

जगरूप अेक-अेक घूंट चाय री पीवै हो, सागै सिगरेट रा कस।

कांता फेर बोली, "थे ई नै छोड़ नी सको कांई ?"

जगरूप ओजूं बोल्यो नी।

बो जाणै हो कै आ इयां ही रोळो करसी रै ज्यासी। पण ईसूं बींरो 'मूड' खराब होग्यो।

इन्दर आंख मिचमिचातो बैठ्यो होग्यो। रीता नै कांता फफेड़ नै खड़ी कर दी। कांता रै रूपरंग में कोई फरक कोनी हो।

बा रात नै सोई किसी ही। थोड़ा घणां बाळ और खिंडग्या हा।

दफ्तर जाणे सूं पैली बण कीं कागज पाधरा कर्‌या, बां में कीं लीकलकोळियां कर्‌या। जी टिक्यो कोनी। बण कागज बिछाया जद बींने बींरो अफसर याद आयो, सेंनी। कित्तो भेंडो मिनख है। मूंढो बींरो झाऊ होवै ज्यूं है। गळे पड़े, जाणै हिड़कायड़ो कुत्तो हुवै। साळे नै कण अफसर बणायो। बठै तो पचणो पड़ै ही है, पण बो घरे ही पांड बांध देवै। बींरो जी कर्‌यो, आज छुट्टी लेलेवै पण छुट्टी लेयां कांई लाभ; अठै भी तो रीता री मा अेक अफसर ही है।

इत्ती नै कांता बोली, "सब्जी ल्याणी कोनी कांई ?"

"ल्यावांला, ल्या, पीसा तो दे।"

साच्यांई रीता री मा अेक अफसर है। अफसर री हुकम तो फेर भी टळे, पण रीता री मा........

"कांई कररैया हो, उठो कोनी।"

"ऊठू। त्यार हूं, आ कागदियां नै समेटल्यूं। पीसा तो देवंती।"

"पीसा, काल दियां हा, दो रिपिया, कठै गया।"

"दो रिपिया, कद दिया ?"

"भूलग्या, सिगरेट पीली होसो, चाय पीली होसी, भायलां नै पिलादी होसी।"

कांता जाणै चोळे री तलासो लेली। "मनै याद हा के बण दो रिपिया दिया हा, आ भी साची है के हूं बांनै खरच कर दिया, सिगरेट चाय में। दो रिपिया भी कोई चीज है आजकालै। होटल में बेठो दो रिपिया साफ। पार ही कोनी पड़ै। साची बात तो आ है के राज में सफा रोळो है। महंगाई री तो हद ही कोनी। कठै

जाय नै लागैगी अब। रिपियै रो तो घेलो होग्यो।"

"कठै गया दो रिपिया", कान्ता कड़कड़ानै सामै आई, बीं वखत बींरों मूंढो देखण जोग हो। आंख्यां लाल होठ फड़फड़ावै, बाळ हालै, मूंढो अेन उतरेड़ो। दो रिपिया भारी चीज ही जाणै।

"दो रिपिया दीया हा कांई पड़ग्या होगा", जगरूप कूंड़ो बोलणै री चेष्टा करी।

"थांरो राम नीसर्‌यो है, थे मिनख हो, थांनै घर रो फिकर कोनी, थे जावंता हा जद मांग्या कोनी।"

"हां, याद आग्या, तूं दिया हा, हूं तो साची बात कैऊं बै दे दिया चाय आळे नै, बो विचारो बोळा दिनां सूं मांगै हो।"

"कांता घणी देर बड़बड़ाई। कांई बाण है कांता री राम जाणै, बा भोत बड़बड़ावै। बींरो काळजो तो तळीजै ही है, म्हारी काया नै और बाळै।"

इन्दर कनै आयनै बोल्यो, "मा, चाय दे।" "आ पड़ी रसोई में, पीलै, मा नै पीवेलो, बाप तो निहाल करै है, थे और फरद्योला।"

रीता भी आंख मसळती सामै खड़ी होगी। "मा, चाय।"

"अरे बळो कीमी—रसोई कानी, उठतां ही चाय, मूंढो घोयो न बात, चाय-चाय। कठै सूं आ घूंट ल्याया है कै सगळां रै चाट लगा दी।"

जगरूप कागदां नै सामटै अर विछावै। बो उठै जे दो रिपिया होवै तो।

"ल्या, दो रिपिया और दे।"

"तनखा आणै रा दस दिन पड़्या है, मेरे कनै अबार दो ही रिपिया बच्या है। सब्जी ल्यायनै बाकी पीसा पूठा ले आईयो,

भलो।"

जगरूप दो रिपिया लेयनै चाल पड्यो।

बजार घणो दूर कोनी हो। जगरूप अठै आठ साल सूं है। दफ्तर में पैली अेल. डी. सी. होयनै आयो हो। हणै यू. डी. सी. होग्यो। तनखा कीं बधी, कीं काम बध्यो, पण जिम्मेवारी घणी बधगी। अफसर पूछै तो जगरूप नै ही। काम दफ्तर रो इसो ऋीणों कै काम बस में कोनी आवै।

रस्तै में बो थैलो लियां बगै हो। अेक सिगरेट और सिलगा ली ही। ईं वगत बो कीं आपरी धुन में हो, घर सूं पिंड छुड़ायनै आयो हो, जद अेक और सिगरेट री तलब होगी। बण सिलगाई अर मस्ती में कस खींचतो बगै हो। इत्तै में बींनै अेक बात याद आगी—अरे, सैनी साळै कैयो हो कै तूं बजट री अेक नकल त्यार कर लेई, त्यार करी कोनी, अर बो जावंता ही ज्यान खावेलो। सब्जी ल्यायनै बेगो-सो बजट री नकल त्यार कर लेवूं। बण बेगा-बेगा पग मेल्या।

सब्जी मंडी में पूंचतां ही अेक बाबू और मिलग्यो, "आवो, आवो, जगरूप जी, सब्जी........"

"हां भई, हुकम हुयो हो होम मिनिस्टर रो।"

"खुशियां मनावो यार, आज साळो मिनिस्टर मरग्यो, बो होनी दयालदास, शिक्षा-मंत्री।"

"साची", जगरूप रै आंख्यां में चमक आगी।

"हां, हां, छुट्टी है आज।"

"हां हां, जद तो खुशी मनावां हां।"

जगरूप सब्जी ल्याणो भूलग्यो अर आपरै साथी सागै चाल पड़्यो। कई देर तांई बो आपरै अफसर री बुराई करी। सागै बो

वानै भी घसीटघा जका ई अफसर रा चापलूस हा। दोनां रा जीवड़ा तिरपत होग्या। वै चालता-चालता अेक होटल में जा बड़या, वो होटल में जठै वो रोजीना चाय पिया करतो।

बैठतां ही जगरूप बोल्यो, "आज तो भाई सूखी चाय कोनी पीवां, कीं मीठो-सीठो ल्याव।"

होटल आळै वैरै पाव मीठो अर चाय ल्यादी।

दोनूं जीसोरै सूं खावणनै लागग्या। फेर धीमे धीमे चाय पी।

फेर दोनूं अेक अेक सिगरेट चासली।

दोनूं टांगां नै लांबी पसारनै मस्ती सूं सिगरेट रा कस लेवंता, वातां होवंती रैयी। आज बां डटनै अफसर अर वारै चापलूसां री आंछी-माड़ी करी। बां अेक-अेक कप और मंगवायो, फेर अेक-अेक सिगरेट ओजूं चासी।

घणी देर बैठणै रै बाद पीसा देवणैरी बारी आई तो कई देर तांई जिद होई। जीत आखर जगरूप री हुई अर पीसा बण दीया। बाकी पांच पीसा पाछा मिल्या जका जेब में घाल लिया।

नीचे उतरतां ही याद आई के घरै तो सब्जी मंगवाई ही, पीसा रैया है पांच ही। अबार...? ल्यो, म्हानैं थोड़ा ही अडीक्या होसी। कीं न कीं बणायो ही होसी। आज तो कोई बात नी, आपां रै टाबरां री ही छुट्टी है, मंत्री जी सुरग सिधारग्या। बो हळवाहळवां घर कानी चाल्यो, पण पूठा पड़ै हा। स्यात् आ गोठ मंहगी पड़सी।

आदमी रो सींग

माजी बतायो, 'हूं तो बारा साल री रांड होगी ही।' हूं माजी कानी देखतो रैयो, माजी कांई ही, अेक सूकेड़ी लकड़ी-सी, इन्नै-बिन्नै हालती फिरै। कठै ज्यान ईं लुगाई में, कियां चालै-फिरै है। पण कड़क इसी, कै जुवान मोटयार में कोनी। दिनगैं झांझरकै उठ सगळां सूं पैली, फेर नळकै नै अडीकै, पाणी आवै जद पाणी भरै। पूरै भर्‌यै घड़िय़ैं नै लेयनै चाल पड़ै। पाणी भरनै बारै लैट्रिन जावै, फेर न्हावै, फूसभारी काढै। हूं तो काम करती नै ही छोडूं, हूँ चाय पीयन स्कूल जाऊं, पूठो आऊं तो घर आळी नै पूछूं, 'माजी कठै गई है।'

"आपरै पी'र गई है।"

माजी रो पी'र है अठै। माजी रो पी'र अर सासरो ईं नगरी में है। नगरी कोई मोटी कोनी। छोटो-सो शहर है। बियां तो सोवयूं मिलै है। म्हारी बदळी हुई है अठै। म्हे अबार ही आया

हूं। माजी रो घर किराये पर मिल्यो है। माजी अकली है।

हूँ फेर माजी नैं पूछ्यो, "माजी, थे गोद-गाद कोनी लियो कींन हो।"

माजी वातां नैं छिड़ ज्यावंती तो छिड़ ही ज्यावंती। बोलण लागी, 'हां भाई, लियो हो गोद, चोई चालतो रैयो। वीरै बेटा-बेटी है, बें म्हारा पोता-पोती। सगळा दिसावर रेवता। जद ही पतो कोनो म्हारं गोद रै बेटं रै कांई हुयो, चालतो रैयो।"

फेर माजी आपरं पोता-पोती, बेटं री बहू री अंक फोटू दिखाई।

हूँ फोटू देखी, म्हारं घर आळी अर म्हारं टाबरां देखी। माजी रै बेटं री बहू, पोता-पोती सगळा अेक कार मे बैठ्या हा। इसा लागै हा जाणै रहीस लोग हुवै। जद माजी बतायो, "मांरं घर री कोठी ही दिसावर मे, घर री कार।"

"फेर काई हुयो, माजी ?"

"हुयो कांई ? सगळो धन सट्टे में हारग्यो म्हारो बेटो, फेर सोक्यूं उडग्यो, बगत रो मोल है।"

"अबार कठ है, माजी, थारं बेटं री बहू, पोता-पोती।" माजी बतायो, 'म्हारं बेट री बहू मे अक्कल कोनी, बावळी है, बाधू आपर पा'रं बठो है।"

"थारं कनै क्यूं कोनी आई ?",

"बधाड़ रांड है।" माजी अेक गाळ काढी, "म्हारे कनं कांई कोनी। सोक्यूं है, देखो कित्ती मोटी हेली है, च्यार म्हारं दुकानां है। पण बिनां अक्कल काई हुवै।"

म्हारी बहू फोटू कानी देखतो बोली, 'माजी, थारी बहू है तो फूटरी, थारो पोतो ही फूटरो है।"

माजी फोटू भापरै कन ले ली, देखी, मुळकी, बोली—

"म्हारी बहू, बेटा, पोता, दुनियां सूं न्यारा है।"

हूँ माजी रै मूंढै कानी देखतो रैयो। माजी रो मूंडो अेक सूक्योड़ो छोडो-सो होर्‌यो हो, मूंढै में अेक ही दांत कोनी हो। मुळकती जद बींरा लाल मसूड़ा ही दीखता। हूं सोचं हो, माजी उदास होवैसी, भांख्यां में पाणी भावैलो। पण माजी बियां ही मुळकती रैयी।

हूं पूछ्यो, "माजी, थे दिसावर गया कांई, थांरै बेटां पोतां कनै।"

"ना", माजी सीधो पडूत्तर दियो।

"ना" रै सागै माजी री नाड़ हालती। बींरा बूचा कान लटपटाता। खीचड़ी बाळां री लटां हालती।

ईं बात रै सागै ही म्हारी बहू रसोई कानी चाल पड़ी। स्याम री रोटी सब्जी रो फिकर जागग्यो। माजी रै अेक चोबारै में चार स्कूल रा छोरा रैवंता। च्यारूं टींगर भ्रळबादी हा। ज्यूं त्यूं भ्रळबाद करता ही रैवंता। कदे छिपकली मारणै खातर लट्ठ उठावंता, कदे लट्टू जगावंता, कदे भ्रापस में घूम मचावंता। माजी नै भ्र सुबावंता कोनी, "भरै मरज्याणो, क्यूं ईंयां करो रे। सापखाधां थारै भोर काम कोनी। कठेऊं भ्राग्या भ्रे रंडवा।'

कदे-कदे भेक टींगर कैवंतो, "माजी रा टाबर तो देख्योड़ा कोनी, ईं नै म्हें कियां सुवावां।"

बात छोरां री कीं साची भी है। बूढ़ै भ्रादमी नै बियां ही रोळो कोनी सुवावै फेर माजी टाबर सार जाणै भी कांई।

भेक दिन माजी बातां भ्रायगी, "म्हारो मिनख मर्‌यो जद हूं बारा साल री ही।"

भ्रा थात तो माजी वार बार कवंती ।

माजी बतायो, 'म्हानै याद ही कोनी, वो काळो हो कै धोळो, मघरो हो कै लांबो, मोटो हो कै पतळो ।'

'हूं जद आई ही, ब्यावसार कीं कोनी जाणती । सफा टाबर ही । घूंघटै सार वी कोनी जाणती । हूं म्हारै मिनख सूं डरती । बो बारै होवंतो तो हूं मांय चली ज्यावंती । बो मांय आवंतो जद हूं बारै । अेकर ही तो आई ही सासरै ।'

'फेर माजी', हूं पूछ्यो ।

"फेर बै चल्या गया, मरग्या ।"

हूं फेर माजी रै मूंढै कानी देख्यो, वा बियां ही भींटा खिडाया बैठी रयी, मुळकती रयी ।

मरणै रै प्रसंग में जकी उदासी आणी चाईजै ही, बा भी माजी र मूंढै मार्थं कोनी लखाई ।

"बै मरया कियां, कांई होग्यो हो बांरै ?" म्हारै घर सूं पूछ लियो ।

माजी री वातां रोचक होवंती, म्है मिलन सुणता । माजी बतायो, "म्हारै घर आळा बड़ा दिलेर बतावै हा । उन्नीस साल रा हा जद ब्याईज्या । दिसावर गया हा । आपरै माम कनै । मामै अेक हेली चिणाई । हेली में अेक बलाय रैवंती । होळी रा दिन हा । बारै धमाळ बाजता, घींदड़ घलती । होळी रा गीत गाईजता । मोड़ा आया, आवंता बूंदिया ल्याया । आवंता ही बूंदिया खाया । खायनै बोल्या, "मामी, वो कमरो बता जठै बलाय रेवै । मामी घणो ही बरज्यो । पण बलाय तो बलाय ही । वै सोग्या । रात नै वांरै खून री उळटी आई । दिनगै तांई बानै मौत आयगी । बलाय तोड़ दियो बानै ।"

माजी बतायो कै बांरी ऊमर सत्तर साल री है। हूं सत्तर साल सूं बारा सास घटाया। अट्ठावन साल पैली री बात माजी बताई। बोरे बाद तो विज्ञान रो असर घर-घर होग्यो। लोग भूत, पलीत, डाकण, स्यारी नै कोनी मानै। पण माजी रै माथै में 'बलाय' आेजूं तांई जीवंती ही। माजी आ भी बताई, "आपणी नगरी में इसो हवेल्यां है जठै 'बलाय' है। किरायेदार बामें रेवै कोनी। म्हारो घर तो देवता रो घर है। हूं पूजा पाठ करूं हूं। पैंडै में रोज माताजी रो दिवलो जोऊंहूं। घणा ही जापा अठै हुया है, पण ओजूं तांई क्यांरो ही डर कोनी।"

साची बात ही माजी धूप-ध्यान भोत राखै, व्रत करै, देवी-देवतावां नै मानै। व्रत करै जद कहाणी कैवै, पतो नीं कांई-कांई कहाण्यां कैवै म्हारो घर आळो सुणै, हूं तो बांसू 'बोर' हो ज्याऊं। कदे-कदे ही गीत गावै, ग्यारस रा गीत, गऊ गंगा रा गीत। माजी रै बोखै मूंढै सूं गीत फूटरा लागता। म्हानै माजी पर दया आवंती। माजी कहाणी धारा परवाह कैवंती, ज्यूं रटघोड़ी हुवै, टेपरिकार्ड त्यार करघोड़ो हुवै।

हूं माजी नै पूछ्यो—"माजी थे दुखी हो का सुखी।"

"सुख कांई देख्यो हूं। दुख ही दुख देख्यो। मिनख मेरै रैयो कोनी। बेटो लियो, बोही कोनी रैयो। पोता-पोती म्हारै कनै कोनी, हूं सुखी कठै।"

हूं बोल्यो, "माजी, थे कैवो हो, मिनख जमारो बार-बार कोनी आवै। थांनै मिनख जमारो दियो जको बेकार ही गयो।"

"सफा बेकार गयो", माजी हंसणनै लागगी।

"फेर थे भगवान् नै क्यूं याद करो, ऊण थांरै सागै कित्ती माड़ी करी।"

"करो तो मांडी ।"

"फेर थे दिनगै उठनै बीनै पांच-सात गाळ काडया करो, सोवंती बकत फेर गाळ काडया करो ।"

"ना, ना, आ बात कोनी । भगवान् काई करै, म्हारै करमा रा फळ है ।"

म्हानै हंसी भी आवंती, कीं उदासी । फेर हूं सोचतो, 'माजी नै बिया कांई दुख है । छोरा कोनी हा, मिनख कोनी हो । बगत तो अण आछो ही काटचो । हां, जिन्दगी रा झटका कोनी झेल्या । आपरी काया नै तो कस्ट कोनी मिल्यो ।' फेर हूं सोचतो, 'जिंदगी रो अरथ इत्तो ही तो कोनी कै बस रोटी पाणी मिलतो रैवै ।' फेर मनै माजी इत्ती उमर में भी अधूरी लागती ।

माजी कदे कदेई मस्ती में आवंती जद हंस-हंस आपरै किरायदारां री पोथी खोलती, "अेक रांड नकटी ही । आपरै कसम सागै माथो लड़ावंती, आपरै कसम री थाणै में सिकायत करी कै औ मनै कूटी । बीं रै कनै अेक ओपरो आदमी आवंतो ।"

"हैं—माजी", हूं 'हैं' पर बोळो जोर देवंतो ।

बा फेर मेरे सूं बेसीं जोर देयनै कैवंती, "हां....हां"

अेक लुगाई नै बा "चुटलिया री रांड कैवंती ।

म्हारै सामनै ईं रो अरथ पूरो कोनी हो । माजी बतायो, "बा माथो उघाड़नै बजारां में फिरती, चोटी उघाड़ी राखती । बा आपरै कसम सागै लड़ती ।"

माजी कसम देख्यो नी, कसम सागै कांई संबंध हुवै, किया लोक-लुगाई जिन्दगी में रेवै, बरतै औ मांजी नै कांई बेरो, ईं वास्तै बा हर लुगाई न बुरी बतावंती ।

हूं छात पर खड़्यो हो। डूंगर रै ओलै सूरज छिपण नै त्यार होरचो हो। सावण रै मीनै रो स्याम घणो सुरंगो हो। म्हारै पड़ौस में अेक गोरी काच में बाळ बावै ही। हूं बीं कानी देखतो हो। बा कदेई काच कानी देखै, कदे म्हारै कानी। हूं कदेई बीं कानी देखूं, कदेई माजी कानी।

मनै मांजी री वात याद आगी। माजी बताई ही, 'हूं जद म्हारै कसम रै मरणै रै पाछै सासरै में आई तो कीं कोनी समझै ही। अेक दिन हूं काच रो चूड़ो पहर लियो, म्हारी सासू मनै भोत लड़ी। अेक दिन मैंहदी मांडणै री जिद्द करी, तो सासू बाता सूं टालती रैयी। फेर सगळा रै सोणै पाछै हूं चिमणी रै च्यानणै में मैंहदी मांडण लागगी।

सासू दूजै कमरै में ही। मनै पूछ्यो, "कांई करै है तू च्यानणै में ?"

हूं कूड़ो बोलगी, "कांटो काढू हूं।"

सासू ओजूं सोगी। बींरो नींद ओजूं उचटी। अण फेर पूछ्यो, "तू करै कांई है ?"

"हूं बोलबाली रैयी।"

"बा उठनै मनै देखली। हूं पूरी मैंहदी मांडली ही।"

बा म्हारै कनै आयनै बड़बड़ावण लागी, "आ रांड म्हानै खराब करैली। क्यूं मांडी मैंहदी तू ?"

"थे नीं मांडो तो हूं मांडली आपी", हूं खुस ही।

"म्हारी सासू जोर-जोर सूं रोवणनै लागगी, हूं समझ न सकी कै रोवै क्यूं है।"

फेर बा आपरा बेटै ने याद करनै बींरो नाम लेयनै रोवणनै लागगी।'

"हूं चुपचाप बैठी रैयी।"

"बण रोवती-रोवती म्हारो हाथ पकड़यो। मनै बारै घीसनै ल्याई। बण म्हारी मांढयोड़ी मैंहदी पाणी सूं उतार दी। हूं भी रोवणनै लागगी।"

"रात री बारा बजी। आधी रात डरावणी, चारू मेर अंधेर गुप। म्हे सासू बहू आंगणे में रोवां। कित्ती बुरी रात ही बा।"

"म्हारो जेठ निकलनै बारै आयो, 'क्यूं रोवो हो थे?' जोर स्यूं बोल्यो।

म्हारी सासू सारी बात बतादी। म्हारो जेठ पूछ्यो, "आ क्यूं रोवै है?"

'हूं तो आ ही बात जाणूं ही कै म्हारी मैंहदी धो दी, ई वास्तै रोऊं हूं।'

म्हारी सासू कांई बतावै ही, बीनै तो आपरै बेटै री दुख समझ्यो हो।"

जेठ बोल्यो, "बहू, सुणलै, सारी बात। भगवान तनै रंडापो दे दियो। भ्रो कीरै ही सारै कोनी। ईरै सागै ही तेरी मैंहदी, तेरो सिंगार, कोर-कांगणा से खतम हो ग्या। तू बाणियै री बेटी है। तेरी सारी जिन्दगानी आगै पड़ी है। तू जे ई यां ही करली, तो तू थारो मूंडो काळो करावैली, म्हांरो भी करावैली।"

माजी बोली, "उकै दिन सूं मैं समझी कै हूं रांड होगी हूं। अर मैं उकै दिन सूं ही आ गांठ बांधली कै मेरे करम में आ डोवटी लिख्योड़ी है। सूकी-पाकी रोटी, बस।"

माजी आपरी बात कहदी। हूं सिसकारो मारयो, म्हारी घर आळी माजी कानी टूंगी-टूंगी देखती रैयी।

माजी रै 'मूड' में कीं फरक कोनी हो। बींरी धोळी धोळी आंख्या सूकी पड़ी ही। भ्रोठ विया ही मुळकै हा।

हूं रात में सिनेमा देखण चल्यो गयो। दस बजे आयो तो

घर-माळी कूंटो खोलेगो । बींरो रूप सरूप दीखगो । हूं कीं हरकत करण लाग्यो तो बा बरजणनै लागगी ।

"सारलै कमरे में माजी सूती है, थांनै सरम कोनी आवै ।"

"माजी बिचारी......"

"म्हारो माथो कीं और तरियां बिचार करणनै लागग्यो । पण फेर सिनेमा रै परदै री तस्वीरां माथै में फिरण नै लागगी । हूं 'वाइफ' री छाती पर हाथ मेल दियो ।

बा म्हारै कानी घूमगी ।

हूं बोल्यो, आदमी जकै दिन ईं धरती पर आयो, जकै दिन लुगाई बीरै सागै ही चिपटेड़ी चाली ही । जिनावर तो जिसो भगवान् रै घर सूं चाल्यो, बिसो ही बैठ्यो है । मिनख नेम कानून रा मोटा सूं मोटा कपड़ा लपेट राख्या है । पण बींरा सींग लुक्या कोनी । बो सामै नीं तो छानै आपरी भूख बुझालेवै है ।"

"बात तो साची है" बा बोली ।

आज आपां देखां कै जिनावर अर पंखेरू सगळा ही लोगां रै सामै संभोग किरिया करता रेवै; हर मिनख रै गुदगुदी हो ज्यावै है ।"

"आ बात तो लागै ही है चाहे मोटयार हो चाहे लुगाई", बण फेर म्हारी हामी भरी ।

दरशण री बातां सूं माथै में कीं उदासी आई, जद हूं बात नै मोड़ दी, "क्यूं, भूख कोनी लागी ?"

बा हंस दी, हूं बीरै और नेड़ो होग्यो ।

"होळै, माजी रो कमरो सारै ही है", बण कैयो ।

दोनूं आप आपरो पलंग संभाल लियो हो । घड़ी देखी तो बारह बजग्या हा ।

हूं पेशाब करणे बारै गयो। माजी बारै खड़ी ही। "माजी कांई बात है ?", हूं पूछ्यो।

"देखे ही टूंटी तो कोनी आगी।"

"नहीं माजी, श्रवार तो बारा ही बज्या है।"

"देख लियो न, श्रोजूं तारियो कठै ऊग्यो।"

माजी नै तारां री निसानी ही।

"थानै नींद कोनी आई ?" हूं पूछ्यो।

"नींद तो ले ली।"

हूं पूठो आयो जद माजी आपरै कमरै में चली गई ही।

हूं जायनै सोग्यो।

अेक दिन माजी बीमार होगी। बींरै पी'र सूं अेक मिनख आयो, "कांई हाल है भूवा ?"

"मरूं कोनी, फिकर मत कर, जा, तेरो काम कर", माजी कैयो।

"मर क्यांसूं है तूं, मरै तो तेरी काया नै मुकति मिल ज्यावै।"

"दवाई ल्यादे", हूं बोल्यो।

"नाजी, दवाई क्यूं चाइजै, मरज्या तो सुख पावै पण मरै कठै।"

माजी टसकै ही, बीनै बुखार हो। फेर माजी न संभालण नै कोई नीं आयो।

मासी टसकती रैयी, बरड़ाती रैयी।

कदे बा कैवंती, "ना ना, हूं कोनी जाऊं म्हार घर में टूंटी लागरी है, बिजळी जगं, हूं कोनी जाऊं।"

कदे वा कैवै, "मरज्याणां जावै नी, तूं क्यूं आयो, ओ तो म्हारो घर है।"

हूं माजो नें देखो, बुखार तेज होरी है।

माजी होस में भी आई। जद वण बतायो, "म्हारो जेठ है, मर्‌योड़ो। वो आयो कै तू चाल। बठै बावड़ी है, माछी तरियां न्हाई, मोज करो।"

हूं कैयो, 'जा मरज्याणां, हूं क्यूं आऊं, म्हारे घरे अबार ही टूंटी लगाई है, हूं तो अठै ही न्हाऊं हूं, मोज करूं हूं।"

म्हारो कीं जी टिक्यो, माजो मरे कोनी।

झांझरकै हूं उठ्यो तो देख्यो, माजी रो शरीर ठंडो होवतो जारयो हो। नाड़ देखी, चूकियें में आगी ही। माजी नाड़ मारण लागगी।

'पा " णी", माजी बोली।

हूं माजी रे मूंढे में पाणी गेर दियो, थोड़ो-थोड़ो।

माजी नाड़ मारती रैयी।

"पा···णी"

हूं ओजूं माजी रै मूंढे में पाणी गेरयो।

माजी रे थोड़ो-सो झटको लाग्यो, अर् माजी चली गी।

'सुख पाई', म्हारै घर सूं बोली।

दो दिनां पाछै बठै माजी रा हकदार हक जमावण सारू भेळा होवण लागग्या। माजी विनां म्हारो जी नी लाग्यो। म्हे मकान बदळ लियो।

म्हे बैठनै घणी बार माजी री बात करां। हूं मन ही मन अेक बात जीभ नीचै गिटनै रै जाऊं। कदे ही माजी नै भी कोनी

पूछ्यो, "थे माजी कदेई कींसूं……। थारै सींगा में सदा ही जेवड़ी घाली रैयो, कदेई थे जेवड़ो…… ।" मनै फेर सगळा ही मिनखा रै सींग दीखण लागग्या, आप-आपरी किस्म रा, बांमै न्यारी-न्यारी जेवड़ी दीखण लागगी। हूं देख्यो म्हारै भी सींग है, बांमैं अेक ओर तरां री जेवड़ो है। हूं म्हारी लुगाई कानी देखनै मुळक्यो, इत्तै में अेक ओर लुगाई घर में आई, जी करयो ई कानी मुळकूं पण मुळक नी सक्यो। बा म्हारै कानी देखी, पण फेर म्हारी लुगाई कानी देखनै मुळकी। हूं फेर आदमी अर जिनावर री तुलना घणी देर तांई मन ही मन करतो रैयो, फेर अेक भेंडी हांसी आगी—हा" हा"' हा"' हा। फेर जोर सूं आपी बोल पड़्यो—'धत् तेरे की।"